यूको अनुगूँज

यूको बैंक की तिमाही हिंदी गृह पत्रिका

वर्ष - 16, अंक - 1, अप्रैल-जून 2025

कृत्रिम बुद्धिमत्ता बनाम मानव संसाधन

यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

UCO BANK
(A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का

Honours Your Trust

हार्ट लैम्प (हृदय दीप)

बानू मुस्ताक

परिचय

कन्नड़ साहित्य की एक प्रतिष्ठित लेखिका, प्रखर सामाजिक कार्यकर्ता और अधिवक्ता सैयदा खुशतारा बानू उर्फ बानू मुस्ताक का जन्म 3 अप्रैल 1948 को हासन, कर्नाटक में हुआ था। इनके पिता एक स्वास्थ्य निरीक्षक थे और माता एक गृहिणी थी।

उर्दू प्राथमिक विद्यालय, अर्सीकिरे (मंड्या, कर्नाटक) से प्रारंभिक शिक्षा उर्दू माध्यम से प्राप्त करने के पश्चात, उन्होंने शिवमोग्गा के एक मिशनरी विद्यालय में कन्नड़ भाषा सीखी। विद्यालयी शिक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन के कारण वे शीघ्र ही माध्यमिक शिक्षा में प्रविष्ट हुईं। उन्होंने विज्ञान विषय में स्नातक की डिग्री प्राप्त की इसके पश्चात एलएलबी विधि में स्नातक (एलएलबी) की पढ़ाई पूरी की। उनकी शिक्षा ने उन्हें केवल ज्ञान नहीं दिया, बल्कि विचारों की स्वतंत्रता, सामाजिक चेतना, और सृजनात्मक अभिव्यक्ति की शक्ति भी प्रदान की। उन्होंने लेखन की शुरुआत 29 वर्ष की आयु में की, जब वे प्रसवोत्तर अवसाद से जूझ रही थीं। उनका लेखन प्रारंभ से ही स्त्री जीवन, मुस्लिम समुदाय की सामाजिक संरचना और असमानताओं के विरुद्ध संघर्ष पर केंद्रित रहा।

बानू मुस्ताक केवल लेखिका नहीं, बल्कि एक सक्रिय सामाजिक परिवर्तनकर्ता भी हैं। 1980 के दशक से वे कट्टरता, लैंगिक असमानता और धार्मिक रूढ़ियों के विरुद्ध संघर्षरत रही हैं। वर्ष 2000 में जब उन्होंने मुस्लिम महिलाओं के मस्जिद में प्रवेश के अधिकार की वकालत की, तो उन्हें सामाजिक बहिष्कार और जानलेवा धमकियों का सामना करना पड़ा। इसके बावजूद वे धर्मनिरपेक्षता, समानता और महिला सशक्तिकरण की पक्षधर बनी रहीं।

इनकी छह कहानी संग्रह, एक उपन्यास, एक निबंध संग्रह और एक कविता संग्रह प्रकाशित हुई है। इनकी कहानियाँ तमिल, मलयालम, हिंदी, उर्दू और अंग्रेज़ी सहित कई भाषाओं में अनूदित हुई हैं। उनकी प्रसिद्ध कहानी "करीनागरगालु" पर आधारित फिल्म "हसीना" (निर्देशक: गिरीश कासरवल्ली) को राष्ट्रीय स्तर पर सराहना प्राप्त हुई।

इनके साहित्यिक और सामाजिक योगदान को अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जिनमें कर्नाटक साहित्य अकादमी पुरस्कार (1999, 2004), राज्योत्सव पुरस्कार (2002), अंतरराष्ट्रीय महिला पुरस्कार (रेडियो एवं टेलीविजन) (1999), पेन इंग्लिश ट्रांसलेट अवार्ड (2024), अंतर्राष्ट्रीय बुकर पुरस्कार (2025) मुख्य रूप से शामिल हैं।

हार्ट लैम्प' एक ऐसा साहित्यिक दीप है, जिसकी लौ उन अंधेरे कोनों तक पहुँचती है, जहाँ स्त्रियों की आवाज़ें सदियों से दबा दी गई थीं। यह संग्रह उन मौन गलियों की दास्तानें है, जहाँ दक्षिण भारत की मुस्लिम महिलाएँ अपने अस्तित्व की लौ को धैर्य और पीड़ा के साथ जलाए रखती हैं। लेखिका बानू मुश्ताक की साहित्यिक शैली एक दीपशिखा के समान है, जो सामाजिक रूढ़ियों और पितृसत्तात्मक ढाँचों पर विचारोत्तेजक प्रश्नचिन्ह अंकित करती है। यह रचनात्मक कृति स्त्री चेतना के मौन विद्रोह को साहित्यिक अभिव्यक्ति प्रदान करती है, जो सामाजिक विमर्श में नई दृष्टि का संचार करती है।

इन कहानियों में स्त्री केवल प्रेम की प्रतीक नहीं, बल्कि संघर्ष की जीवंत मूर्ति है। 'हार्ट लैम्प' की मेहरुन हो या 'बी ए वुमन वन्स' की बेनाम नायिका — ये पात्र स्त्रीत्व की पीड़ा और प्रतिरोध की जीवंत प्रतिमाएं हैं, जो टूटे सपनों की राख में आत्मा की गरिमा की खोज करतीं हैं। मेहरुन का प्रेम जब इनायत द्वारा त्यागा जाता है, तो वह केवल एक स्त्री नहीं, एक बुझा हुआ दीपक बन जाती है, जिसकी लौ कभी रिश्तों की गर्मी से जलती थी, वो अब केवल स्मृतियों की राख है।

मुश्ताक की कहानियाँ प्रतीकों की गहराई से भरी हैं। 'दी स्टोन स्लैब्स फॉर शाइस्ता महल' में प्रेम के खोखले वादों पर व्यंग्य है, तो 'फायर रेन' में एक मां की विद्रोही चेतना और उसकी असहमति की गूंज है- "मैं मां नहीं, महामारी हूं" जैसे वाक्य सामाजिक दबावों को चुनौती देते हैं। 'हाई-हील्ड शू' में जूती, सभ्यता और दमन का प्रतीक बनती है, जिसे तोड़कर अरीफा मुक्ति की घोषणा करती है। 'रेड लूँगी' में रजिया की थकान हर उस स्त्री की थकान है, जो घर की दीवारों में अपनी पहचान खोजती है।

कन्नड़, दक्खिनी, उर्दू और अरबी के मिश्रण से बनी लेखिका की शैली केवल भाषाई नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और भावनात्मक गहराई को भी उजागर करती है। उनके संवादों में किस्सागोई की परंपरा झलकती है — जैसे कोई बुज़ुर्ग महिला अपनी बहनों को जीवन की कहानियाँ सुना रही हो।

'सॉफ्ट व्हिस्पर्स' और 'दी श्राउड' जैसी कहानियाँ स्त्री मन की दार्शनिक गहराई को दर्शाती हैं — जहाँ अतीत की स्मृतियाँ, सामाजिक धारणाएँ और मृत्यु का भ्रम एक साथ गूंजते हैं। 'ए डिसीजन ऑफ द हार्ट' में मां और पत्नी के बीच यूसुफ का मौन पुरुषों की उस असमंजस को दर्शाता है, जो भावनाओं में बहकर सबको खुश करने की कोशिश में खुद को खो बैठते हैं।

'हृदय दीप' केवल एक कहानी संग्रह नहीं, बल्कि एक संघर्षरत आत्माओं की लौ है, जो अंधेरे में रोशनी की उम्मीद जगाती है। यह संग्रह उस साहित्यिक चेतना का विस्तार है, जो बंदया आंदोलन की विरासत को आगे बढ़ाते हुए स्त्री को प्रेम की वस्तु नहीं, बल्कि स्वयं की जगह तलाशती एक जीवंत शक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है।

बानू मुस्ताक का जीवन एक प्रेरणास्पद गाथा है, जहाँ साहित्य, संघर्ष और संवेदना एक साथ प्रवाहित होते हैं। वे उन विरल साहित्यकारों में से हैं, जिनकी लेखनी समाज के मौन को स्वर देती है और परिवर्तन की राह प्रशस्त करती है।

यूको अनुगूँज

यूको बैंक की तिमाही हिंदी गृह पत्रिका
वर्ष - 16, अंक - 1
अप्रैल-जून 2025

संरक्षक

श्री अश्वनी कुमार
प्रबंध निदेशक एवं
मुख्य कार्यपालक अधिकारी

प्रेरणा

राजेन्द्र कुमार साबू
कार्यपालक निदेशक

विजयकुमार निवृत्ति कांबले
कार्यपालक निदेशक

दिग्दर्शन

राजेश नागर
मुख्य महाप्रबंधक

घनश्याम परमार
महाप्रबंधक

संपादक

डॉ. हेमलता
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल

सूरज कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

प्रदीप कुमार महतो
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

अनुक्रमणिका

शीर्षक		पृष्ठ
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश		2
कार्यपालक निदेशक का संदेश		3
कार्यपालक निदेशक का संदेश		4
मुख्य महाप्रबंधक का संदेश		5
संपादकीय		6
विशिष्ट आलेख		
कृत्रिम बुद्धिमत्ता बनाम मानव संसाधन: भविष्य की दिशा - सहयोग या प्रतिस्पर्धा	दीपक मौर्या	7
कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कारण रोजगार में संभावित बदलाव और मानव संसाधन की रणनीतियाँ	अविनाश पाण्डेय	9
कार्यस्थल पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता बनाम मानव संसाधन	शोयब मो० अंसारी	12
कृत्रिम बुद्धिमत्ता बनाम मानव संसाधन: निर्णय प्रक्रिया में अंतर	अंकुश गर्ग	14
भावनात्मक बुद्धिमत्ता बनाम कृत्रिम बुद्धिमत्ता	मुकेश कुमार	18
नैतिकता और संवेदनशीलता: कृत्रिम बुद्धिमत्ता बनाम मानव संसाधन- एक समकालीन विश्लेषण	रचना कुमारी चौधरी	22
शिक्षा और प्रशिक्षण में कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं मानव संसाधन की भूमिका	ओम प्रकाश नारायण	26
साक्षात्कार		
एक मुलाकात - प्रो० सुदेष्णा सरकार, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर		28
पुस्तक समीक्षा		
मैनी लाईव्ज़ मैनी मास्टर्स - डॉ. ब्रायन व्रीज	डॉ. हेमलता	31
बाल वीथिका		32
अन्वेषा दास, कुमारी समृद्धि दाश एवं स्वयं सार्थक प्रधान की तूलिका से		
विविध : आलेख		
नंबर फीवर 349 – एक सफल विपणन (मार्केटिंग) रणनीति जो जानलेवा साबित हुई	विवेकानंद सिंह	33
यात्रा - वृत्तांत		
लाहौल (हि.प्र.) की एक अविस्मरणीय यात्रा	एकाग्र प्रकाश	38
कविता		
मजदूर	अक्षयदीप त्रिपाठी	42
जिंदगी की बैंकिंग	विशाल अग्रवाल	43
मेरा हिमाचल - मेरी पहचान	शिवानी बालानी	43
भोजनम्		
अनरसा : एक पारंपरिक स्वाद	भाव्या	44
विविध गतिविधियां		
प्रधान कार्यालय की गतिविधियां		45
अंचल कार्यालय की गतिविधियां		47
पाठकीय प्रतिक्रिया		48

प्रकाशन सम्पर्क : यूको बैंक, राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय, 10 बी टी एम सरणी, कोलकाता - 700001

ई-मेल : horajbhasha.calcutta@ucobank.co.in, फोन: 033-48097729

इस अंक में प्रकाशित विचार संबंधित लेखकों के हैं, संपादक मंडल तथा यूको बैंक के नहीं।
इन विचारों से संपादक मंडल अथवा यूको बैंक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है।
इन रचनाओं की मौलिकता का प्रमाण-पत्र लेखकों द्वारा दिया गया है।

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

यह मेरे लिए अत्यंत गौरव का विषय है कि 'यूको अनुगूँज' के इस विशिष्ट अंक के माध्यम से मैं आपसे संवाद स्थापित कर रहा हूँ, जिसमें हम 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता बनाम मानव संसाधन' जैसे समकालीन, विचारोत्तेजक एवं रणनीतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण विषय पर विमर्श की दिशा में एक सार्थक पहल कर रहे हैं।

वित्तीय वर्ष 2024-25 की समाप्ति के साथ, यूको बैंक ने अपनी सुदृढ़ता एवं सतत विकास की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति का परिचय दिया है। 31 मार्च 2025 को बैंक का कुल कारोबार वर्ष-दर-वर्ष 14.12% की सराहनीय वृद्धि के साथ ₹5,13,527 करोड़ तक पहुँच गया। सकल अग्रिमों में 17.72% तथा कुल जमाराशि में 11.56% की वृद्धि इस तथ्य का सशक्त प्रमाण है कि हम अपने ग्राहकों की अपेक्षाओं पर निरंतर खरे उतरे हैं। इसी अवधि में परिचालन लाभ 33.48% की प्रभावशाली वृद्धि के साथ ₹1,699 करोड़ तक पहुँच गया, जबकि निवल लाभ में 23.98% की उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई, जो हमारी वित्तीय दक्षता, रणनीतिक दूरदर्शिता एवं सेवा प्रतिबद्धता को दर्शाता है। बैंक के रिटेल, कृषि एवं एमएसएमई क्षेत्रों में क्रमशः 35.09%, 20.02% एवं 18.55% की उल्लेखनीय वृद्धि इस तथ्य का सशक्त संकेत है कि हम समाज के विविध वर्गों तक अपनी पहुँच को सुदृढ़ता से विस्तार दे रहे हैं। साथ ही, सकल एनपीए में 77 आधार अंकों तथा निवल एनपीए में 39 आधार अंकों की गिरावट हमारी सुदृढ़ जोखिम प्रबंधन रणनीतियों, विवेकपूर्ण ऋण वितरण प्रणाली एवं सतत निगरानी तंत्र की प्रभावशीलता को दर्शाती है।

बैंक की उपलब्धियों के मूल में जहाँ एक ओर नवाचार की धारा के रूप में आधुनिक तकनीकों एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता का सशक्त प्रवाह रहा है, वहीं दूसरी ओर हमारे समर्पित मानव संसाधन ने अपनी दक्षता, प्रतिबद्धता और दूरदृष्टि से इस प्रगति को साकार रूप प्रदान किया है। बैंकिंग क्षेत्र में डिजिटल परिवर्तन ने कार्यप्रणाली को न केवल अधिक कुशल और पारदर्शी बनाया है अपितु सेवा की गुणवत्ता को भी नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है तथापि, ग्राहक सेवा की आत्मीयता, संबंधों की गरिमा और निर्णयों की सूक्ष्मता में आज भी मानव संसाधन की भूमिका अपरिहार्य, अमूल्य और केंद्रीय बनी हुई है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आज के परिप्रेक्ष्य में डेटा विश्लेषण, जोखिम मूल्यांकन एवं ग्राहक अनुभव को परिष्कृत करने का एक सशक्त उपकरण सिद्ध हो रही है। तथापि, यह मानव संवेदनाओं की गहराई, नैतिक निर्णयों की सूक्ष्मता तथा सामाजिक समझ की व्यापकता का प्रतिस्थापन नहीं कर सकती है। यूको बैंक इस संतुलन की महत्ता को भली-भाँति समझता है और तकनीकी नवाचारों तथा मानव संसाधन की सामूहिक शक्ति के समन्वय से एक उत्तरदायी, सशक्त एवं समावेशी भविष्य की ओर अग्रसर है।

आप सभी का सतत सहयोग एवं अटूट विश्वास यूको बैंक के लिए प्रेरणा का अक्षय स्रोत रहा है। आइए, हम एकजुट होकर उस भविष्य की ओर अग्रसर हों, जहाँ तकनीकी नवाचार और मानवीय संवेदनाएँ समान गति से आगे बढ़ें और मिलकर एक ऐसी संस्थागत संस्कृति का निर्माण करें जो प्रगति, समावेशिता और उत्तरदायित्व की मिसाल बने।

अश्वनी कुमार

कार्यपालक निदेशक का संदेश

'यूको अनुगूँज' के 16वें वर्ष के प्रथम अंक के माध्यम से आपके साथ संवाद की यह यात्रा हमारे लिए गौरव का विषय है। यह अंक एक विचार-दीप है, जो 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता बनाम मानव संसाधन' जैसे सामयिक और चिंतनशील विषय पर विमर्श की दिशा में एक उजास बिखेरता है। यह पहल उस सेतु के समान है, जो तकनीक की तीव्रता और मानवता की गहराई को जोड़ते हुए भविष्य की ओर बढ़ने का मार्ग प्रदान करता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के आगमन से बैंकिंग क्षेत्र एक परिवर्तनकारी दौर से गुजर रहा है। नियमित प्रक्रियाओं के स्वचालन से लेकर जटिल तथ्यों के विश्लेषण तक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता बैंकों की सेवा प्रक्रियाओं को अधिक तेज़, सटीक और कुशल बनने में सहायता कर रहा है। तकनीकी और मानवीय बुद्धिमत्ता के समन्वय से अधिक प्रभावशाली एवं त्वरित परिणाम प्राप्त हो रहे हैं ।

यूको बैंक में हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानवीय विवेक के संतुलन को तार्किक रूप से अपनाने की दिशा में अग्रसर हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग बैंक के कार्मिकों हेतु "यूको सिरी" के रूप में, गृह एवं कार ऋण आदि खुदरा उत्पादों में नए संभावित ग्राहकों तक तीव्र और प्रभावी रूप से पहुंच बढ़ाने और उच्च जोखिमों की पहचान में भी कर रहे है, जिससे धोखाधड़ी पहचान प्रणाली की दक्षता में वृद्धि हो रही है। ग्राहकों की बैंक तक पहुँच बढ़ाने और स्वचालित प्रक्रियाओं को सशक्त बनाने के लिए "उदय" के रूप में समस्या निवारण स्तंभ (चैट बॉट) विकसित किया गया है।

किन्तु कृत्रिम बुद्धिमत्ता कभी भी मानवीय सहानुभूति, विवेकपूर्ण निर्णय-क्षमता, संवेदनशीलता एवं चिंतनशीलता को प्रतिस्थापित नहीं कर सकती है। हमें इसकी अंतर्निहित जोखिमों जैसे- गोपनीयता का अभाव, पारदर्शिता की कमी, जाली प्रारूप (डीपफेक), नैतिकता एवं संवेदनशीलता की कमी को ध्यान में रखते हुए मानव बुद्धि को सर्वोपरि रखना होगा। यूको बैंक में हमारा विश्वास है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव संसाधन प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि सहयोगी हैं- जो ग्राहकों को बेहतर सेवा प्रदान करने और कर्मचारियों को सशक्त माध्यम व समयोचित जानकारी उपलब्ध कराने के लिए एक साथ कार्य करते हैं।

आइए, हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता को केवल एक उपकरण नहीं, बल्कि एक दूरदर्शी सहयात्री के रूप में अपनाएं - एक ऐसा साथी जो हमारी संस्थागत यात्रा को गति, दिशा और गरिमा प्रदान करें। इसके विवेकपूर्ण उपयोग से हम न केवल उत्पादकता में वृद्धि करेंगे, बल्कि एक ऐसी कार्य-संस्कृति की नींव रखेंगे जो नैतिकता, उत्तरदायित्व और नवाचार के मूल्यों से परिपूर्ण हो। मानवीय गरिमा और तकनीकी नवाचार के समन्वय का यही दृष्टिकोण हमें उत्कृष्टता से सर्वोत्कृष्टता की ओर अग्रसर करता है।

राजेन्द्र कुमार साबू

कार्यपालक निदेशक का संदेश

यूको अनुगूँज पत्रिका एक बार पुन: 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता बनाम मानव संसाधन' जैसे समसामयिक विषय के साथ आप सभी के समक्ष है। वर्तमान कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने हमारे संचार प्रक्रिया और भाषा के उपयोग में क्रांतिकारी परिवर्तन किए है। इसी के फलस्वरूप वर्तमान में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग शिक्षा, वित्त, रक्षा, कृषि, स्वास्थ्य सेवा, बैंकिंग आदि विभिन्न क्षेत्रों में किया जा रहा है।

मानव ने अपनी असीम बुद्धि का उपयोग करके कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से मशीनों को कार्य करने हेतु सक्षम तो बनाया ही, अपितु उन्हें मनुष्यों की तरह सोचने की शक्ति देने में भी सफल हुए। वर्तमान में रोबोट के द्वारा विभिन्न सफल ऑपरेशन किए जा रहे है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग से कार्यों को करने में अत्यधिक सरलता आई है किन्तु वह मानव बुद्धि का प्रतिस्थापन नहीं कर सकती है। वर्तमान में संवेदना, कल्पनाशीलता, चेतना, रचनात्मकता जैसे गुण मनुष्यों में ही है अत: कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मानव सर्जनात्मकता को पूरी तरह नष्ट नहीं कर सकती है। अंतत: मनुष्य ही मौलिकता तथा नवाचार का अंतिम स्त्रोत बना रहेगा।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग विश्वभर में तेजी से हो रहा है जिससे सुरक्षा, गोपनीयता और पारदर्शिता संबंधित चिंताएँ उभर रही है। एतदर्थ हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग पारदर्शी, निष्पक्ष और मानव मूल्यों के अनुरूप हो। कृत्रिम बुद्धिमत्ता को अपने संस्थान की उन्नति में एक सहायक के रूप में देखने से निश्चित रूप से निर्णयों में पारदर्शिता, विविधता का सम्मान एवं मानव केंद्रित दृष्टिकोण को बढ़ावा मिलेगा और यह तकनीक हमारे कार्यस्थल को अधिक समावेशी, न्यायपूर्ण और नवाचारी बना सकती है।

आइए, हम आशावादी दृष्टिकोण के साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता को अपनी और अपने संस्थान की प्रगति में एक अंग बनाए, इसका विवेकपूर्ण उपयोग करें जिससे न केवल हमारी उत्पादकता बढ़ेगी बल्कि एक नैतिक और उत्तरदायी कार्यसंस्कृति की भी स्थापना होगी।

विजयकुमार निवृति कांबले

मुख्य महाप्रबंधक (राजभाषा) का संदेश

हमें गर्व की अनुभूति हो रही है कि वित्तीय वर्ष 2025-26 के प्रथम अंक (जून-2025) के रूप में 'यूको अनुगूँज' आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है। इस पत्रिका के माध्यम से अपने यूको परिवार के साथियों से जुड़ना सदैव सुखद अनुभव होता है। पत्रिका के माध्यम से हमारे स्टाफ सदस्यों की रचनात्मक प्रतिभाओं को एक विशिष्ट मंच भी मिल जाता है।

मानव सर्वदा सृजन का स्रोत रहा है और इसके लिए वह नए-नए अनुसंधान और आविष्कार करता रहता है। मानव मस्तिष्क ने अपनी गहन सोच के माध्यम से कृत्रिम बुद्धिमता के रूप में एक कृत्रिम मानव (रोबोट) सृजित कर लिया है जिसमें कार्यों को करने से लेकर सोचने तक की क्षमता है। वह आपके प्रश्नों का उत्तर दे सकता है और आपसे बात भी कर सकता है अतः कृत्रिम बुद्धिमता मानव सृजित एक परिवर्तनशाली एवं क्रांतिकारी तकनीक है।

'कृत्रिम बुद्धिमत्ता बनाम मानव संसाधन' विशेषांक में हमारे स्टाफ सदस्यों के उत्कृष्ट लेखों को समाहित किया गया है। जिनमें एआई से जुड़ी संभावनाओं, चुनौतियों और नैतिक विचारों पर गहन अंतर्दृष्टि साझा की गई है। साथ ही साथ यह पत्रिका आप सभी को कृत्रिम बुद्धिमत्ता से संबंधित कुछ नवीन पहलुओं जैसे 'शिक्षा और प्रशिक्षण में कृत्रिम बुद्धिमत्ता बनाम मानव संसाधन', 'कार्यस्थल पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता बनाम मानव संसाधन' आदि विषयों को विस्तार से जानने में सहायता प्रदान करेगी।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमारे दैनिक जीवन में तेजी से महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है और जब बात प्रौद्योगिकी और नवाचार की आती है तो यह वर्तमान के सबसे चर्चित विषयों में से एक है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता में शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और आर्थिक अवसरों को नागरिकों तक सरलता से पहुँचाने की उत्तम क्षमता है। इसलिए, हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता को ऐसे संसाधन के रूप में उपयोग करें जिससे हमारे बैंक का, हमारा एवं ग्राहक जन का विकास हो।

राजेश नागर

संपादकीय

"यन्त्रेण कार्यं साध्यते, बुद्ध्या तु निर्णयः क्रियते।
मानवो यत्र चेतनः, तत्रैव सृजनं भवेत्॥"

अर्थात् "यंत्रों से कार्य सिद्ध होता है, पर निर्णय बुद्धि से लिया जाता है।"

जहाँ मानव की चेतना है, वहाँ सृजन संभव है। मानव सभ्यता और संस्कृति का इतिहास सृजन, जिज्ञासा और नवोन्मेष की अविरल धारा है। आदि काल से ही मनुष्य ने अपने जीवन को सुगम बनाने के लिए समय-समय पर नवीन तकनीक एवं उपकरणों का विकास किया है। कहा गया हैं -"आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है।" इस सत्य को प्रमाणित करते हेतु मनुष्य सदैव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा जीवन को अधिक सुगम बनाने के लिए नित्य चिंतन और प्रयोग करता रहा है।

वर्तमान काल में मानव समाज उसी यात्रा के जिस महत्वपूर्ण चरण में है, वह है – "कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI)", जो मानव जीवन में एक नव क्रांति का सूचक है। यह न केवल सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग को नई दिशा प्रदान कर रही है अपितु इसमें कल्पना और विश्लेषण की अभूतपूर्व क्षमता है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी का सतत विकास निःसंदेह मानव बुद्धि की उत्कर्ष-पराकाष्ठा का परिचायक हैं और इस सम्पूर्ण विकास की प्रक्रिया के माध्यम से मनुष्य जीवन अधिक सरल, सहज और भौतिक सुविधाओं से सम्पन्न हुआ है। इस प्रकार की सम्पूर्ण यांत्रिक व्यवस्था के उपरांत भी मानव संसाधन समाज और उसके विकास की आत्मा है। तकनीकी के उन्नत पायदान पर होने पर भी कृत्रिम बुद्धिमता का प्रयोग मानव की रचनात्मकता, संवेदनशीलता और नैतिक विवेक पर आधारित है। यद्यपि तकनीकी का प्रयोग कार्यों की सुगमता से संबंधित है पर मानवीय संसाधनों के अभाव में प्राप्य उद्देश्यों की प्राप्ति होना असंभव एवं दुष्कर है।

वित्तीय वर्ष 2025-26 में "यूको अनुगूँज" का यह प्रथम अंक 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता बनाम मानव संसाधन' विषय पर केंद्रित है। इसमें विभिन्न आलेखों के माध्यम से कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संभावित अवसरों और संभावित दुविधाओं पर विचार-विमर्श किया गया है, साथ ही, इस अंक में मजदूर, ज़िंदगी की बैंकिंग, मेरा हिमाचल जैसी कविताएँ; लाहौर यात्रा-वृत्तांत; नंबर फीवर 349 लेख; बाल वीथिका; अनरसा भोजनम् ; बैंक की विभिन्न गतिविधियों की झलक तथा 'मैनी लाइव्ज़, मैनी मास्टर्स' पुस्तक की समीक्षा भी सम्मिलित है।

यूको बैंक का सदैव ध्येय है कि नवोन्मेष कार्यों को अपनाने के साथ-साथ जीवन में मानवीय मूल्य भी सर्वोपरि रहें। हमें पूर्ण विश्वास है कि यूको अनुगूँज का यह अंक न केवल आपको तकनीकी और मानवीय चिंतन के नए दृष्टिकोण से अवगत कराएगा अपितु इसमें संकलित विचार एवं अनुभव आपको आत्ममंथन और चिंतन के लिए भी प्रेरित करेंगे।

आपके अमूल्य सुझावों की प्रतीक्षा में।

डॉ. हेमलता

कृत्रिम बुद्धिमत्ता बनाम मानव संसाधन: भविष्य की दिशा – सहयोग या प्रतिस्पर्धा

दीपक मौर्या
वरिष्ठ प्रबंधक
स्टाफ प्रशिक्षण केंद्र, जयपुर

हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं जिसे तकनीकी क्रांति का युग कहा जा सकता है। यह युग मानव इतिहास के उन युगों में से एक है जहाँ प्रौद्योगिकी की प्रगति बेहद तीव्र गति से हो रही है। कभी जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमें केवल वैज्ञानिक कल्पना पर आधारित फिल्मों में दिखाई देती थी, आज वह हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बन चुकी है। स्मार्टफोन से लेकर ग्राहक सेवा तक, बैंकिंग से लेकर स्वास्थ्य सेवा तक हर क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की उपस्थिति स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।

यदि हम आज की स्थिति की तुलना औद्योगिक क्रांति के दौर से करें, तो कई समानताएं सामने आती हैं। जिस प्रकार मशीनों ने शारीरिक श्रम का विकल्प प्रस्तुत किया था, उसी प्रकार आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता, बौद्धिक श्रम का विकल्प बनने की ओर अग्रसर है।

औद्योगिक युग से पूर्व अधिकांश कार्य कुशल-अकुशल कारीगरों द्वारा छोटे स्तर पर संपन्न होते थे। लेकिन मशीनों के आगमन से उत्पादन की मात्रा, गुणवत्ता और गति तीनों में परिवर्तन आया, साथ ही पारंपरिक नौकरियों में भारी गिरावट भी देखी गई। हालांकि, बाद में इन्हीं मशीनों की सहायता से नए क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा हुए और शहरीकरण तथा आर्थिक विकास को भी गति मिली।

वर्तमान में कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने अनेक क्षेत्रों में अपना प्रभुत्व स्थापित किया है विशेष रूप से तथ्यों के विश्लेषण, ग्राहक सेवा, लेखांकन, स्वास्थ्य परामर्श और यहां तक कि लेखन जैसे क्षेत्रों में भी। कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा जटिल कार्यों का तेजी से और सटीक निष्पादन इसे एक अत्यंत शक्तिशाली उपकरण बनाता है। मशीनें थकती नहीं हैं, उनकी उत्पादकता में गिरावट नहीं आती और वे निरंतर कार्य कर सकती हैं।

हालांकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता कार्य क्षमता में तेजी से विकास कर रहा है, किन्तु मानवीय गुणों जैसे सहानुभूति, नैतिकता, सामाजिक समझ, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, रचनात्मकता और नेतृत्व जैसे मानवीय गुणों में अभी भी यह काफी पीछे है। मानव ही ऐसे निर्णय लेने में सक्षम है जिनमें भावना और नैतिकता का संतुलन हो। यही विशेषताएं हैं जो एक टीम को प्रेरित करती हैं, सामाजिक ताने-बाने को बनाए रखती हैं और जटिल मानवीय स्थितियों को संभालने में सक्षम बनाती हैं।

इस विषय पर लिखते हुए मुझे वर्ष 2023 में प्रदर्शित चलचित्र "द क्रिएटर" के दृश्य याद आते हैं जिसमें मानव और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के मध्य संघर्ष का चित्रण किया गया था। यद्यपि यह फिल्म कल्पना पर आधारित थी, किन्तु तकनीक

का इतिहास यह दर्शाता है कि जो कभी कल्पना थी, वह आज यथार्थ बन चुका है। भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता केवल निर्णय लेने की क्षमता तक सीमित न रहकर भावनात्मक बुद्धिमत्ता जैसे गुण भी प्राप्त कर सकता है। ऐसे में सवाल यह उठता है कि क्या तब मशीनें भी शोषण का अनुभव कर 'हड़ताल' पर जाएंगी?

यदि हम चाहते हैं कि तकनीक और मानवता के बीच एक सहयोगात्मक रिश्ता बना रहे, तो इसके लिए वैश्विक स्तर पर प्रभावी नीति-निर्माण आवश्यक है। वर्तमान समय में दुनियाभर के अनेक देश कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संभावित जोखिमों और सामाजिक प्रभावों को गंभीरता से लेते हुए व्यापक नीतियाँ बना रहे हैं। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, कम से कम 69 देशों ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सुरक्षा और शासन से जुड़ी जनचिंताओं के समाधान हेतु गहन विचार विमर्श किया है।

इन्हीं वैश्विक प्रयासों के तहत अगस्त 2025 से सामान्य प्रयोजन वाले कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिए 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता अधिनियम' के नियम प्रभाव में आने वाले हैं, जो वैश्विक कृत्रिम बुद्धिमत्ता विकास को अधिक सुरक्षित, पारदर्शी और उत्तरदायी बनाने की दिशा में एक मील का पत्थर सिद्ध हो सकते हैं।

दुर्भाग्यवश, भारत के पास अब तक कोई औपचारिक 'राष्ट्रीय कृत्रिम बुद्धिमत्ता नीति' अथवा विशिष्ट कृत्रिम बुद्धिमत्ता विनियमन मौजूद नहीं है। यह अभी सू.प्रौ. अधिनियम 2000 एवं 2001 एवं अन्य कानूनों पर निर्भर हैं। ऐसे में यह आवश्यक है कि भारत भी समय रहते अपनी रणनीति तय करे और ऐसे प्रभावी नियम-कानून बनाए, जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अनियंत्रित और शोषणकारी प्रयोग को रोकें, पारदर्शिता, जवाबदेही और नैतिकता को प्राथमिकता दें और मानवाधिकारों, रोजगार और सामाजिक संरचना की रक्षा सुनिश्चित करें।

यदि इन नीतियों को समय रहते नहीं अपनाया गया, तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रसार न केवल आर्थिक-सामाजिक असमानताओं को बढ़ा सकता है, बल्कि यह भविष्य में लोकतांत्रिक मूल्यों और मानव गरिमा के लिए भी चुनौती बन सकता है।

हमें शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से मानव संसाधनों एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता में समन्वय स्थापित कराना होगा। यह सुनिश्चित करना ज़रूरी है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता मनुष्य का विकल्प नहीं, बल्कि पूरक बने।

इस प्रकार हम कह सकतें हैं कि वर्तमान में हम अपने प्रयासों से एक ऐसे परिवर्तनकारी युग की ओर अग्रसर हैं, और जहाँ मानव रचनात्मकता, नेतृत्व, संवेदनशीलता और नैतिक निर्णय की भूमिका निभाएगा कृत्रिम बुद्धिमत्ता विश्लेषण, सटीकता और निष्पादन को गति प्रदान करेगी।

यदि इन दोनों शक्तियों को पूरक रूप में देखा जाए और उनमें संतुलित समन्वय सुनिश्चित किया जाए, तो भविष्य निश्चित ही अधिक उत्पादक, संवेदनशील और नवाचारी होगा।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कारण रोजगार में संभावित बदलाव और मानव संसाधन की रणनीतियाँ

अविनाश पाण्डेय
उप अंचल प्रमुख
अंचल कार्यालय, करनाल

वर्तमान युग को यदि "तकनीकी क्रांति का युग" कहा जाए, तो यह एक सटीक और सार्थक अभिव्यक्ति होगी। बीते कुछ वर्षों में जिस तीव्रता से तकनीकी नवाचार हुए हैं, विशेषकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में, वह मानव सभ्यता के विकास के इतिहास में एक अभूतपूर्व परिवर्तन के रूप में देखा जा सकता है। एक समय था जब कृत्रिम बुद्धिमत्ता केवल प्रयोगशालाओं और शोध-पत्रों तक सीमित थी, लेकिन आज यह हमारी दैनिक दिनचर्या से लेकर जटिल औद्योगिक प्रक्रियाओं तक में प्रवेश कर चुकी है। मोबाइल एप्स में प्रयुक्त वॉयस सहायक, ऑनलाइन शॉपिंग की सिफारिशें, स्वचालित वाहन, बैंकिंग प्रणाली में फ्रॉड डिटेक्शन, स्वास्थ्य क्षेत्र में रोग निदान और प्रशासन में निर्णय लेने की प्रक्रियाएँ, ये सभी कृत्रिम बुद्धिमत्ता की प्रत्यक्ष उपस्थिति के उदाहरण हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता अब केवल तकनीकी सहायता का माध्यम नहीं रह गई है, बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था का एक अनिवार्य स्तंभ बनती जा रहा है। इसका प्रभाव शिक्षा, चिकित्सा, उत्पादन, कृषि, रक्षा, बैंकिंग, मीडिया, संचार, विश्लेषण और प्रशासन जैसे प्रत्येक क्षेत्र में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस तकनीकी परिवर्तन ने न केवल कार्य करने के तरीकों को बदला है, बल्कि यह भी तय करने लगा है कि कौन सा कार्य किस प्रकार किया जाएगा और किसके द्वारा, मनुष्य द्वारा या मशीन द्वारा।

इन्हीं परिवर्तनों के बीच, रोजगार की संरचना भी तेजी से बदल रही है। अनेक परंपरागत नौकरियाँ, जो वर्षों से स्थायित्व का प्रतीक मानी जाती थीं, अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कारण समाप्ति की ओर अग्रसर हैं। वहीं दूसरी ओर अनेक नई भूमिकाएँ और पेशे भी जन्म ले रहे हैं, जिनकी कल्पना कुछ दशक पूर्व असंभव मानी जाती थी। यह द्वैध प्रवृत्ति—जहाँ एक ओर रोजगार का ह्रास हो रहा है और दूसरी ओर नए अवसर उभर रहे हैं, समाज और नीति-निर्माताओं के सामने नई चुनौतियाँ प्रस्तुत कर रही है।

ऐसे में यह स्वाभाविक है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता को लेकर उत्साह और आशंका दोनों ही भावनाएँ समान रूप से सामने आ रही हैं। एक ओर जहाँ इसके समर्थक इसे मानवीय क्षमता का विस्तार मानते हैं, वहीं आलोचक इसे नौकरियों के लिए खतरा और सामाजिक असमानता को बढ़ाने वाला तत्व करार देते हैं। विशेष रूप से जब बात रोजगार और मानव संसाधन प्रबंधन की होती है, तब यह चर्चा और भी प्रासंगिक हो जाती है, क्योंकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता का सबसे प्रत्यक्ष प्रभाव कार्यस्थल पर कर्मचारियों की भूमिकाओं पर पड़ रहा है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अर्थ है – ऐसी मशीनें या कंप्यूटर प्रणालियाँ जो मानवीय सोच, तर्क, विश्लेषण, निर्णय और भाषा को समझने जैसी क्षमताओं का अनुकरण कर सकें। दूसरे शब्दों में, जब कोई तकनीकी प्रणाली 'सोचने' और 'सीखने' जैसे कार्य कर सके, तो वह कृत्रिम बुद्धिमत्ता कहलाती है। आज के परिप्रेक्ष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता केवल प्रयोगशालाओं और अनुसंधान तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह विविध व्यावसायिक, सामाजिक और प्रशासनिक कार्यों में प्रत्यक्ष रूप से प्रयुक्त हो रही है। उदाहरण के तौर पर, बड़े-बड़े कॉर्पोरेट अब ग्राहक सेवा के लिए चैटबॉट का प्रयोग करते हैं, जो बिना रुके 24 घंटे स्वचालित उत्तर देने में सक्षम हैं। बैंकिंग और वित्तीय संस्थानों में धोखाधड़ी की पहचान, बीमा कंपनियों में दावा मूल्यांकन, ई-कॉमर्स साइट्स पर खरीदारी की प्रवृत्ति के आधार पर सिफारिशें - यह सब कृत्रिम बुद्धिमत्ता की वास्तविक दुनिया में उपयोगिता के प्रमाण हैं। स्वास्थ्य क्षेत्र में तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा एक्स-रे, सीटी स्कैन

जैसी छवियों का विश्लेषण से डॉक्टरों को पूर्वानुमान लगाने में मदद मिल रही है, जिससे जटिल बीमारियों की शीघ्र पहचान संभव हो रही है।

रोजगार पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव बहुआयामी और गहरा होता जा रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के आगमन से कार्य-प्रणालियों की प्रकृति ही बदल रही है। एक ओर यह तकनीक दोहराव और श्रम-साध्य कार्यों को स्वचालित बनाकर कार्य की गति और दक्षता को उल्लेखनीय रूप से बढ़ा रही है, वहीं दूसरी ओर यह पारंपरिक मानवीय भूमिकाओं को सीमित भी कर रही है। जिन कार्यों में जटिल सोच, भावनात्मक बुद्धिमत्ता या निर्णय-निर्माण की अत्यधिक आवश्यकता नहीं होती जैसे डेटा एंट्री, बेसिक कस्टमर सपोर्ट, टेली-कॉलिंग, बिलिंग, इन्वेंट्री प्रबंधन और उत्पादन लाइन संचालन, वे अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित टूल्स या रोबोटिक्स द्वारा संभाले जा रहे हैं।

इस परिवर्तन से उन करोड़ों श्रमिकों और कर्मचारियों पर सीधा प्रभाव पड़ रहा है जो अब तक इन पारंपरिक कार्यों में संलग्न थे। विशेष रूप से विकासशील देशों में, जहाँ रोजगार की एक बड़ी संख्या इन कार्यों पर निर्भर थी, वहाँ इस बदलाव ने चिंता और अस्थिरता की स्थिति उत्पन्न की है। एक अनुमान के अनुसार, आने वाले दशकों में भारत में लगभग 6 से 8 करोड़ नौकरियाँ ऐसे क्षेत्रों में खतरे की ज़द में हो सकती हैं जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता और स्वचालन की संभावनाएँ अधिक हैं।

हालाँकि यह भी ध्यान देने योग्य है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता रोजगार को नष्ट नहीं कर रही, बल्कि यह नई प्रकार की नौकरियाँ भी उत्पन्न कर रही है, जिनमें तकनीकी दक्षता, विश्लेषणात्मक सोच और नवाचार की आवश्यकता होती है। अब समस्या यह है कि ये नई नौकरियाँ उन्हीं लोगों के लिए हैं जो इन नई आवश्यकताओं के अनुरूप खुद को ढालने के लिए तैयार हैं। इसलिए, यह अत्यंत आवश्यक हो गया है कि हम इस परिवर्तन को केवल खतरे के रूप में न देखें, बल्कि इसे एक अवसर मानकर इससे जुड़ी रणनीतियों पर गंभीरता से विचार करें।

यह कहना कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता केवल मानव श्रम को प्रतिस्थापित कर रही है, अधूरा दृष्टिकोण है। सच्चाई यह है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता अनेक क्षेत्रों में सहयोगी शक्ति बनकर उभरी है, जो मानव की बौद्धिक, रणनीतिक और रचनात्मक क्षमताओं को और अधिक प्रभावशाली बनाती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आज ऐसा उपकरण बन गया है, जो जटिल डाटा को बेहद तेज़ी से संसाधित कर उपयोगी जानकारी प्रदान करता है, जिससे निर्णय लेने की प्रक्रिया और अधिक तथ्यपरक और सटीक हो जाती है।

विशेष रूप से वे कार्य जो विश्लेषण, नवाचार, रणनीति, नेतृत्व, नैतिक निर्णय और रचनात्मकता की माँग करते हैं, वे केवल मानव के ही बस की बात हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता यहाँ सहायक की भूमिका निभाती है, न कि प्रतिस्थापक की। यह मनुष्य को साधारण, दोहराव वाले और समय लेने वाले कार्यों से मुक्त कर रणनीतिक और सृजनात्मक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने का अवसर देती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इस युग में मानव संसाधन विभाग की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। अब मानव संसाधन का कार्य केवल भर्ती, वेतन और अवकाश प्रबंधन तक सीमित नहीं रह गया है। यह विभाग अब संगठन के भविष्य निर्माण का रणनीतिक अंग बन चुका है। जब कृत्रिम बुद्धिमत्ता पारंपरिक नौकरियों को चुनौती देती है, तब मानव संसाधन को यह सुनिश्चित करना होता है कि कर्मचारियों को नवीन तकनीकों से प्रशिक्षित किया जाए। इसके लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, प्रमाणन योजनाएँ और माइक्रो लर्निंग प्लेटफार्म अपनाने की आवश्यकता है। इसके साथ ही, मानव संसाधन को कर्मचारियों की शिक्षा और प्रशिक्षण की प्रक्रिया को व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार ढालने हेतु कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित लर्निंग एनालिटिक्स को भी अपनाना चाहिए।

दूसरी महत्वपूर्ण रणनीति है मानव और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बीच सहयोग को बढ़ावा देना। संगठन को अब ऐसी कार्य संस्कृति विकसित करनी होगी जहाँ मशीनें तथ्य और निष्कर्ष उपलब्ध कराएँ और मनुष्य उन पर निर्णय लें। इसके

लिए मानव संसाधन विभाग को कार्यप्रणालियों, भूमिकाओं और उत्तरदायित्वों को पुनः परिभाषित करना होगा। साथ ही, कर्मचारियों में रचनात्मकता, नेतृत्व क्षमता, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और अनुकूलनशीलता जैसी मानवीय क्षमताओं का विकास करना अनिवार्य हो गया है, क्योंकि यही वे क्षमताएँ हैं जिन्हें कृत्रिम बुद्धिमत्ता नहीं दोहरा सकती।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता केवल तकनीकी विषय नहीं है, इसका सामाजिक और नैतिक पहलू भी उतना ही महत्वपूर्ण है। किसी संगठन द्वारा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित निर्णयों में पारदर्शिता, निष्पक्षता और जिम्मेदारी बनाए रखना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, यदि कोई कृत्रिम बुद्धिमत्ता भर्ती प्रक्रिया में अनजाने में जाति, लिंग या पृष्ठभूमि के आधार पर भेदभाव करता है, तो यह न केवल कानूनन गलत होगा, बल्कि संगठन की साख को भी हानि पहुँचा सकता है। इसलिए मानव संसाधन को कृत्रिम बुद्धिमत्ता एल्गोरिद्म के नैतिक ऑडिट, निष्पक्ष डेटा प्रशिक्षण और विविधता को प्रोत्साहन देने जैसे कार्यों में सक्रिय भूमिका निभानी होगी। उन्हें यह भी सुनिश्चित करना होगा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के निर्णय प्रक्रियाओं में मानव हस्तक्षेप बना रहे और अंतिम निर्णय मानवीय मूल्यों के अनुरूप हो।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संदर्भ में भारत की स्थिति भी उल्लेखनीय है। देश में युवा जनसंख्या, स्टार्टअप कल्चर और तेजी से डिजिटलीकरण के कारण भारत कृत्रिम बुद्धिमत्ता को अपनाने वाले अग्रणी देशों में शामिल हो रहा है। सरकार भी 'डिजिटल इंडिया', 'मेक इन इंडिया', 'प्रधान मंत्री कौशल विकास योजना' जैसी योजनाओं के माध्यम से युवाओं को कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित कौशल सिखाने हेतु प्रयासरत है। नासकॉम जैसे संगठन भी 'फ्यूचर स्किल्स' पहल के माध्यम से उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुरूप प्रशिक्षण प्रदान कर रहे हैं। इसके साथ ही, अनेक विश्वविद्यालयों और तकनीकी संस्थानों ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता को पाठ्यक्रम का भाग बनाना प्रारंभ कर दिया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग, कोडिंग, डेटा साइंस जैसे विषयों को विद्यालय स्तर पर शामिल करने की सिफारिश की गई थी, जो कि इस बदलाव को जड़ से अपनाने की दिशा में एक सराहनीय कदम है। इससे छात्रों को कम उम्र से ही तकनीकी समझ और भविष्य की नौकरियों के लिए आवश्यक क्षमताओं का विकास करने का अवसर मिलेगा।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित तकनीकों को अपनाने के साथ-साथ संगठनों को कर्मचारियों के मानसिक स्वास्थ्य और नौकरी के भविष्य को लेकर उनके भीतर उत्पन्न होने वाली अनिश्चितता को भी समझना होगा। मानव संसाधन विभाग को संवाद और विश्वास की संस्कृति विकसित करनी होगी, ताकि कर्मचारी तकनीकी परिवर्तन को भय नहीं, बल्कि अवसर की दृष्टि से देखें। इसके लिए ओपन कम्युनिकेशन चैनल, कर्मचारियों की फीडबैक प्रणाली और मनोवैज्ञानिक परामर्श जैसी नवीन पहल भी जरूरी होंगी।

इस पूरे परिदृश्य का निष्कर्ष यह है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कारण रोजगार का स्वरूप अवश्य बदलेगा, लेकिन यह कहना कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता से रोजगार समाप्त हो जाएगा – एक अतिशयोक्ति होगी। कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक उपकरण है, जो मनुष्य की क्षमताओं को बढ़ाता है, उन्हें समाप्त नहीं करता। हाँ, जो लोग परिवर्तन के लिए तैयार नहीं हैं, उनके लिए यह चुनौतीपूर्ण अवश्य होगा। वहीं जो लोग इस तकनीकी बदलाव को अपनाते हुए स्वयं को अद्यतन करेंगे, उनके लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता अवसरों का सागर सिद्ध होगा।

अतः इस बदलते दौर में मानव संसाधन विभाग को अपनी नीतियों, सोच और दृष्टिकोण को भी बदले बिना काम नहीं चलेगा। यह आवश्यक है कि संगठन एक दीर्घकालिक रणनीति तैयार करें, जो कर्मचारियों को भविष्य के लिए तैयार करे, नैतिक व न्यायपूर्ण कृत्रिम बुद्धिमत्ता अपनाए और मानवता को केंद्र में रखकर प्रौद्योगिकी का प्रयोग करे। यही वह दृष्टिकोण है, जिससे हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता युग को मानवता के हित में परिभाषित कर सकेंगे।

कार्यस्थल पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता बनाम मानव संसाधन

शोयब मो० अंसारी
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय, अजमेर

आज के इस दौर में कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने दैनिक कार्यों और वाणिज्यिक क्षेत्र में प्रगति लाई है, जिससे अछूता आज कोई भी पहलू नहीं बचा है। जहां आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने मानवीय कार्य को सरल, सुगम और सटीकता प्रदान की है वहीं जालसाजी और अनैतिक प्रवृत्तियों को भी बढ़ावा दिया है। इन सब से बीच सकारात्मक तरीके से कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग बैंकिंग और मानव संसाधन में बहुत सहयोगी साबित हो सकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव संसाधन के बीच का संबंध बैंकिंग क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा नहीं, बल्कि एक सहयोग है, जिसका उद्देश्य अधिक दक्षता, बेहतर कर्मचारी अनुभव और मजबूत व्यावसायिक परिणाम प्राप्त करना है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का योगदान और मानव संसाधन की भूमिका

कृत्रिम बुद्धिमत्ता बार-बार किए जाने वाले कार्यों, जैसे कर्मचारियों के बुनियादी सवालों का जवाब देना, को संभाल सकती है, जिससे मानव संसाधन कार्मिकों को रणनीतिक कार्यों के लिए समय मिलता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता बड़ी मात्रा में तथ्यों का विश्लेषण करके कर्मचारी प्रदर्शन, जुड़ाव और जोखिमों के बारे में जानकारी प्रदान करता है, जिससे प्रतिभा प्रबंधन और कर्मचारी चयन एवं प्रतिधारण में सक्रिय निर्णय लेना संभव होता है। इसके अलावा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता व्यक्तिगत कर्मचारी डेटा के आधार पर अनुकूलित प्रशिक्षण और विकास कार्यक्रम, कैरियर पथ और कार्य-प्रणाली को सुगम बनाती है, जिससे कर्मचारी संतुष्टि और संस्था के प्रति जुड़ाव बढ़ता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग भर्ती और प्रदर्शन मूल्यांकन में पक्षपात को पहचानने और कम करने के लिए किया जा सकता है, जिससे निष्पक्ष और समावेशी मानव संसाधन प्रथाएं बढ़ती हैं। यह प्रक्रिया पारदर्शिता और समानता को बढ़ावा देती है, जो बैंकिंग जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

चुनौतियां और समाधान

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग के साथ कुछ चुनौतियां भी जुड़ी हुई हैं। बैंकों को कर्मचारियों की संवेदनशील जानकारी की सुरक्षा के लिए मजबूत तथ्य संरक्षण नीतियां और प्रणाली लागू करने की आवश्यकता है। मानव संसाधन कार्मिकों को यह समझने की जरूरत है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता उपकरण अपनी सिफारिशें कैसे करते हैं, ताकि निष्पक्षता सुनिश्चित हो सके और विश्वास बना रहे। साथ ही, कर्मचारियों को नए कृत्रिम बुद्धिमत्ता-संचालित उपकरणों और कार्यप्रवाहों के उपयोग और अनुकूलन के लिए प्रशिक्षण और समर्थन की आवश्यकता होती है। इन चुनौतियों का समाधान प्रशिक्षण, खुला संचार और मजबूत प्रबंधन ढांचे के माध्यम से किया जा सकता है। इससे न केवल कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभावी उपयोग सुनिश्चित होता है, बल्कि कर्मचारियों का विश्वास भी बढ़ता है।

मानव संसाधन का रणनीतिक महत्व

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की मौजूदगी मानव संसाधन कार्मिकों को प्रशासनिक कार्यों से हटकर रणनीतिक पहलों पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति देती है। वे संगठनात्मक सफलता में महत्वपूर्ण भागीदार बन सकते हैं, जो व्यावसायिक लक्ष्यों के साथ संरेखित प्रतिभा रणनीतियों को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। यह बदलाव मानव संसाधन को संगठन के समग्र विकास में योगदान देने में सक्षम बनाता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव क्षमताओं का संतुलन

आधुनिक कार्यस्थल में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता विभिन्न उद्योगों में कार्यों को स्वचालित करके, निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाकर और दक्षता में सुधार करके क्रांति ला रही है। हालांकि, यह सवाल उठता है कि क्या कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव उत्पादकता के लिए प्रतिस्पर्धी है या सहयोगी साझेदार के रूप में कार्य कर सकती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता डेटा प्रोसेसिंग और दोहराव वाले कार्यों में विशेषज्ञता रखती है, जबकि मानव संसाधन रचनात्मकता, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और महत्वपूर्ण सोच जैसी अद्वितीय क्षमताएं लाते हैं। अधिकतम उपयोगिता और उत्पादकता के लिए, कृत्रिम बुद्धिमत्ता की क्षमताओं और मानव कौशलों के बीच सही संतुलन बनाना आवश्यक है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लाभ

कृत्रिम बुद्धिमत्ता सिस्टम अपने कार्यों और निर्णय में उच्च स्तर की सटीकता प्रदर्शित करते हैं, जिससे तथ्यों की प्रविष्टि और गणना जैसे कार्यों में त्रुटि दर कम होती है। विनिर्माण और गुणवत्ता नियंत्रण में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता-संचालित निरीक्षण प्रणालियां उन दोषों की पहचान कर सकती हैं, जो मानव से छूट सकते हैं, जिससे गुणवत्ता आश्वासन में उल्लेखनीय सुधार होता है। इसके अलावा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा स्वचालित कार्यों से श्रम लागत में कमी आती है और संसाधनों का अधिक प्रभावी उपयोग होता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता-संचालित अंतर्दृष्टि संसाधन आवंटन को अनुकूलित करने में मदद करती है, जिससे मानव और तकनीकी संपत्तियों का कुशल उपयोग सुनिश्चित होता है।

मानव क्षमताओं की अनूठी शक्ति

मानव संसाधन रचनात्मकता, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और महत्वपूर्ण सोच जैसी क्षमताएं लाते हैं, जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता दोहरा नहीं सकती। रचनात्मकता नए विचारों और समाधानों को उत्पन्न करने की मानव क्षमता है, जो नवाचार को बढ़ावा देती है। यह कर्मचारियों को नए उत्पाद विकसित करने, प्रक्रियाओं में सुधार करने और ग्राहकों के साथ अद्वितीय तरीकों से जुड़ने में सक्षम बनाती है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता ग्राहकों और सहकर्मियों के साथ संबंध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह विश्वास और सहयोग को बढ़ावा देती है, जिससे कर्मचारी व्यक्तिगत रूप से ग्राहकों की जरूरतों को पूरा कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, जटिल सामाजिक गतिशीलता को समझने और प्रबंधित करने की क्षमता मानव कर्मचारियों को अपरिहार्य बनाती है। महत्वपूर्ण सोच और जटिल समस्याओं को हल करने की मानव क्षमता चुनौतीपूर्ण वातावरण में महत्वपूर्ण है। यह कर्मचारियों को बहुआयामी चुनौतियों का विश्लेषण करने और त्वरित, अनुकूलनीय समाधान विकसित करने में सक्षम बनाती है।

सहयोग और संतुलन

अधिकतम उत्पादकता के लिए, यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि कौन से कार्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिए उपयुक्त हैं और किन कार्यों में मानव हस्तक्षेप की आवश्यकता है। तथ्यों-आधारित और दोहराव वाले कार्य, जैसे तथ्यों की प्रविष्टि या बुनियादी विश्लेषण कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिए आदर्श हैं, जबकि रचनात्मक, पारस्परिक और महत्वपूर्ण कार्यों में मानव कौशल उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता को एकीकृत करने में चुनौतियां जैसे नौकरी विस्थापन को भी संबोधित करना होगा। संगठनों को प्रशिक्षण और समर्थन के माध्यम से कर्मचारियों को नए उपकरणों के साथ तालमेल बिठाने में मदद करनी चाहिए, ताकि एक सहज परिवर्तन सुनिश्चित हो सके।

निष्कर्ष : कृत्रिम बुद्धिमत्ता का कार्यस्थल में एकीकरण संगठनों और कर्मचारियों के लिए एक परिवर्तनकारी अवसर प्रस्तुत करता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव क्षमताओं के बीच संतुलन बनाकर व्यवसाय उत्पादकता बढ़ा सकते हैं, नवाचार को बढ़ावा दे सकते हैं और एक गतिशील कार्य वातावरण बना सकते हैं। इस बदलते परिदृश्य में आगे बढ़ने के लिए, नैतिक विचारों को प्राथमिकता देना आवश्यक है ताकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता समाज के लिए लाभकारी हों। इस सहजीवी संबंध को अपनाने से कार्यबल तेजी से स्वचालित भविष्य में फलने-फूलने में सक्षम होगा।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता बनाम मानव संसाधन: निर्णय प्रक्रिया में अंतर

अंकुश गर्ग
प्रबंधक
अंचल कार्यालय, जोधपुर

वर्तमान युग तकनीकी विकास का युग है इसमें सबसे प्रमुख और चर्चित तकनीकी उपलब्धि है - कृत्रिम बुद्धिमत्ता। वहीं दूसरी ओर, मानव संसाधन जो किसी भी संगठन, संस्था या देश की आत्मा माने जाते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने अनेक क्षेत्रों में क्रांति ला दी है। शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यवसाय, वित्त, सुरक्षा और विशेषकर मानव संसाधन प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग तेजी से बढ़ा है। इस तकनीकी उन्नति ने निर्णय प्रक्रिया की प्रकृति को भी बदल दिया है। जहाँ एक ओर कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित प्रणालियाँ बड़ी मात्रा में तथ्यों का विश्लेषण कर त्वरित और गणनात्मक निर्णय लेने में सक्षम हैं, वहीं दूसरी ओर मानव संसाधन विभाग के विशेषज्ञ निर्णय में मानवीय अनुभव, संवेदनशीलता, नैतिकता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता का समावेश करते हैं। यह लेख इन्हीं दोनों प्रणालियों - कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव संसाधन - की निर्णय प्रक्रिया में अंतर को विस्तार से स्पष्ट करता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता क्या है?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का आशय है – वह तकनीक, जिसमें मशीनें मानव मस्तिष्क की तरह सोचने, समझने, सीखने और निर्णय लेने में सक्षम होती हैं। यह कम्प्यूटर विज्ञान की एक शाखा है जिसमें मशीनों को इस प्रकार तैयार किया जाता है कि वे स्वयं अनुभवों से सीख सकें और तर्क आधारित कार्य कर सकें।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता : निर्णय प्रक्रिया की विशेषताएँ:

1. **डेटा-आधारित निर्णय:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता मशीनें बड़े डेटा सेट का विश्लेषण कर निष्कर्ष निकालती हैं।
2. **गति और कुशलता:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता निर्णय तेजी से लेती है, जिससे समय की बचत होती है।
3. **निष्पक्षता:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता में मानवीय पक्षपात या व्यक्तिगत भावना नहीं होती।
4. **स्वचालन:** निर्णय प्रक्रिया स्वचालित होती है और लगातार अद्यतन किया जा सकता है।

मानव संसाधन क्या है?

मानव संसाधन का आशय है – किसी संस्था या संगठन में कार्यरत लोग, उनकी क्षमताएँ, ज्ञान, अनुभव और भावनाएँ। मानव संसाधन विभाग का कार्य केवल कर्मचारियों का प्रबंधन नहीं है, बल्कि सही व्यक्ति के लिए सही कार्य और वातावरण सुनिश्चित करना भी है।

मानव निर्णय प्रक्रिया की विशेषताएँ :

1. **भावनात्मक बुद्धिमत्ता:** मानव संसाधन निर्णय केवल तथ्यों पर नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं पर भी आधारित होते हैं।
2. **अनुभव आधारित निर्णय:** वर्षों का कार्यानुभव निर्णय को परिपक्व बनाता है।
3. **नैतिकता और मूल्यों की भूमिका:** मानवीय निर्णयों में नैतिक पक्ष, सहानुभूति और समाजहित का ध्यान रखा जाता है।
4. **अप्रत्याशित परिस्थितियों में निर्णय क्षमता:** मनुष्य जटिल और अप्रत्याशित स्थितियों में भी प्रभावी निर्णय ले सकता है।

प्रमुख उदाहरणों द्वारा तुलना

1. नौकरी के लिए चयन प्रक्रिया

- **कृत्रिम बुद्धिमत्ता निर्णय:** उम्मीदवार के (रिज़्यूमे), आत्मवृत जीपीए, कौशल और अनुभव के डेटा के आधार पर स्कोरिंग कर चयन करता है। इसमें पूर्वाग्रह की संभावना कम होती है।
- **मानव संसाधन निर्णय:** उम्मीदवार के भाव, व्यवहार, कार्य संस्कृति के साथ मेल, भाषा और समूह कार्य को भी ध्यान में रखता है। यहाँ साक्षात्कार के दौरान सहज व्यवहार को महत्व दिया जाता है।

2. पदोन्नती या अवकाश देने का निर्णय

- कृत्रिम बुद्धिमत्ता: पिछले प्रदर्शन, समयबद्धता, केपीआई जैसे आँकड़ों का विश्लेषण कर निर्णय करती है।
- मानव संसाधन: कर्मचारी की परिस्थितियों, पारिवारिक स्थिति, मानसिक स्वास्थ्य आदि का भी ध्यान रखता है।

3. संघर्ष समाधान

- **कृत्रिम बुद्धिमत्ता:** प्रोटोकॉल या नियमों के अनुसार समस्या का समाधान देती है।
- **मानव संसाधन:** दोनों पक्षों की भावनाएँ, संवाद और आपसी समझदारी को प्राथमिकता देता है।

निर्णय प्रक्रिया का मूलभूत ढाँचा

- **कृत्रिम बुद्धिमत्ता में निर्णय प्रक्रिया:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता की निर्णय प्रक्रिया पूर्व-निर्धारित एल्गोरिद्म, मशीन लर्निंग और डेटा एनालिटिक्स पर आधारित होती है। ए आई सिस्टम सूचना एकत्र करता है, उसे प्रोसेस करता है और निष्कर्ष निकालता है। इसमें मानवीय हस्तक्षेप न्यूनतम होता है। उदाहरण: भर्ती प्रक्रिया में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित आवेदक ट्रैकिंग प्रणाली (एटीएस) सैकड़ों आत्मवृतो को स्कैन कर कुछ ही मिनटों में उपयुक्त उम्मीदवारों की सूची तैयार कर सकते हैं।
- **मानव संसाधन में निर्णय प्रक्रिया:** मानव संसाधन विशेषज्ञ निर्णय लेते समय मात्र आंकड़ों पर निर्भर नहीं रहते। वे व्यक्ति के व्यवहार, भावनाओं, टीम में योगदान, नैतिकता और कार्य संस्कृति के अनुरूप निर्णय करते हैं। उनकी प्रक्रिया में संवाद, सहानुभूति, अनुभव और विचार-विमर्श शामिल होते हैं। उदाहरण: एक मानव प्रबंधक किसी कर्मचारी की कार्यक्षमता का मूल्यांकन करते समय उसके पारिवारिक तनाव या स्वास्थ्य समस्याओं को भी ध्यान में रख सकता है।

तर्क बनाम संवेदना

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का आधार गणितीय और तार्किक सोच है। यह निर्णय तर्कसंगत तरीके से लेती है, जहाँ भावनाओं की कोई भूमिका नहीं होती। लेकिन यही इसकी सबसे बड़ी सीमा भी है। वहीं, मानव निर्णय प्रक्रिया में संवेदना, सहानुभूति और नैतिकता महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मानव संसाधन प्रबंधक समूह भावना, प्रेरणा तथा संगठनात्मक संस्कृति जैसे अमूर्त पहलुओं को ध्यान में रखकर निर्णय लेते हैं।

निर्णय की गति बनाम गुणवत्ता

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सबसे बड़ी विशेषता इसकी गति है। यह भारी-भरकम तथ्यों को कुछ ही पलों में प्रोसेस कर निष्कर्ष दे सकती है। इसका प्रयोग बड़े संगठनों में तेज़ और स्वचालित निर्णय लेने के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए, एक कृत्रिम बुद्धिमत्ता टूल हजारों आवेदनों में से कुछ ही मिनटों में उपयुक्त उम्मीदवारों की सूची बना सकती है। हालाँकि, मानव संसाधन विशेषज्ञ अधिक समय लेते हैं, लेकिन वे जटिल, संदर्भ-आधारित और गहराई से विश्लेषित निर्णय देने में सक्षम होते हैं। वे विभिन्न दृष्टिकोणों और परिणामों पर विचार करते हैं, जिससे निर्णय की गुणवत्ता बेहतर हो सकती है, परंतु किसी उम्मीदवार की भाव-भंगिमा या भावनात्मक बुद्धिमत्ता को परखना कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिए चुनौतीपूर्ण है।

अनुकूलनशीलता और लचीलापन

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की निर्णय क्षमता उसके प्रशिक्षण और योजनाओं पर निर्भर करती है। वह अनजान या अप्रत्याशित परिस्थिति में सीमित विकल्पों तक ही सीमित रह जाता है। जब परिस्थिति तथ्यों से परे हो, तब कृत्रिम बुद्धिमत्ता भ्रमित हो सकता है या त्रुटिपूर्ण निर्णय ले सकती है। वहीं, मानव संसाधन विशेषज्ञ जटिल, अस्पष्ट या अप्रत्याशित परिस्थितियों में भी निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। वे संगठन की संस्कृति, सामाजिक वातावरण और व्यक्तिगत संदर्भों को समझते हुए निर्णय में बदलाव कर सकते हैं।

नैतिकता और निष्पक्षता

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आज भी नैतिक दृष्टिकोण से सीमित है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता सिस्टम उस तथ्यों पर आधारित होते हैं जिस पर उन्हें प्रशिक्षित किया गया होता है। यदि वह तथ्य पक्षपातपूर्ण है, तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता का निर्णय भी पक्षपातपूर्ण हो सकता है - जिसे हम एल्गोरिथम पक्षपात कहते हैं। मानव विशेषज्ञ नैतिकता के आधार पर निर्णय लेते हैं। वे सामाजिक न्याय, समान अवसर, विविधता और समावेशन को ध्यान में रखते हैं। उदाहरणत: अगर किसी नौकरी के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता बार-बार पुरुष उम्मीदवारों को प्राथमिकता देती है क्योंकि पूर्व तथ्यों में यही प्रवृति रही है, तो मानव विशेषज्ञ यह समझ सकता है और संतुलन बना सकता है।

व्यवहार और संचार की भूमिका

कृत्रिम बुद्धिमत्ता मौखिक या लिखित भाषा को प्रोसेस कर सकता है लेकिन शरीर की भाषा, चेहरे के हाव-भाव और संवाद की बारीकियों को समझना उसके लिए अभी भी चुनौतीपूर्ण है। मानव विशेषज्ञ संचार के इन सभी पहलुओं का गहराई से मूल्यांकन कर सकते हैं। साक्षात्कार के दौरान उम्मीदवार के आत्मविश्वास, संवाद शैली और भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को मानव अधिक सटीक रूप से समझ सकता है।

व्यावहारिक उदाहरण

भर्ती प्रक्रिया : कृत्रिम बुद्धिमत्ता एटीएस सॉफ्टवेयर आत्मवृत (रेज़्यूमे) में कीवर्ड खोजकर छँटनी करता है। जबकि मानव संसाधन विशेषज्ञ रचनात्मकता, विविध अनुभव और अनौपचारिक गुणों पर भी ध्यान देते हैं।

प्रदर्शन मूल्यांकन: कृत्रिम बुद्धिमत्ता कार्य पूर्ण होने का समय,

कार्य की मात्रा, उपस्थिति आदि को देखकर निष्कर्ष निकालती है। जबकि मानव संसाधन टीमवर्क, नवाचार, नेतृत्व और कार्य नैतिकता जैसे मानवीय गुणों पर विचार करता है।

एकीकृत दृष्टिकोण की आवश्यकता

भविष्य की निर्णय प्रक्रिया केवल कृत्रिम बुद्धिमत्ता या केवल मानव आधारित नहीं हो सकती। एक समन्वित मॉडल की आवश्यकता है जिसमें:

- कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथ्य आधारित विश्लेषण करे
- मानव संसाधन विशेषज्ञ अंतिम निर्णय में मानवीय पक्षों का मूल्यांकन करें

उदाहरण: कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रारंभिक छँटनी करे, जबकि मानव संसाधन अंतिम साक्षात्कार एवं नियुक्ति करें।

भविष्य की दिशा

आगामी समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव संसाधन का सहभागी मॉडल अधिक प्रभावशाली होगा। जैसे-जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विकास होगा, वह अधिक "भावनात्मक" और "मानव-सदृश" होने की कोशिश करेगा। परंतु तब भी वह केवल मानवीय भावनाओं का अनुकरण कर सकेगा, अनुभव नहीं कर सकेगा। वहीं मानव संसाधन को भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता की मदद से अपने निर्णयों को डेटा-साक्ष्य आधारित बनाना चाहिए। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उद्देश्य मानव संसाधनों को प्रतिस्थापित करना नहीं, बल्कि सशक्त बनाना होना चाहिए। भावनात्मक बुद्धिमत्ता और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का मेल ही सही निर्णय प्रक्रिया का आधार बन सकता है जहाँ-

- कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथ्य एकत्र करे, प्रारंभिक विश्लेषण करे।
- मानव संसाधन अंतिम मूल्यांकन और रणनीतिक निर्णय ले।

साथ ही, कृत्रिम बुद्धिमत्ता को नैतिक प्रशिक्षण (एथिकल एआई) और पारदर्शिता की दिशा में विकसित किया जाना आवश्यक है, जिससे यह अधिक जिम्मेदार और विश्वसनीय बन सके।

निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव संसाधन दोनों की अपनी-अपनी विशेषताएं और सीमाएं हैं। जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता तेज़, कुशल और तथ्य-आधारित निर्णय लेने में सक्षम है, वहीं मानव संसाधन मानवीय समझ, संवेदनशीलता और नैतिक जिम्मेदारी के आधार पर निर्णय लेते हैं। भविष्य में, सबसे प्रभावशाली निर्णय प्रक्रिया वह होगी जिसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता की तकनीकी दक्षता और मानव की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का संतुलित समावेश हो।

निर्णय प्रक्रिया किसी भी संस्था, संगठन या समाज की रीढ़ होती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव संसाधन, दोनों के अपने-अपने क्षेत्र में विशेष महत्व हैं। आज आवश्यकता है कि हम इन दोनों को प्रतिस्पर्धी नहीं, पूरक मानें। मानव संसाधनों को चाहिए कि वे कृत्रिम बुद्धिमत्ता को सहयोगी के रूप में देखें वहीं कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विकास करने वाले विशेषज्ञ उसे ऐसा बनाएँ कि वह मानवीय मूल्यों को समझ सके, न कि उन्हें नकारे। अंततः निर्णय वही श्रेष्ठ होता है जिसमें तर्क, भावना और नैतिकता – तीनों का संतुलन हो।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता बनाम कृत्रिम बुद्धिमत्ता

मुकेश कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय, जोधपुर

21वीं सदी को तकनीकी क्रांति और मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता की सदी कहा जा सकता है। आज मानव समाज एक तरफ उच्च तकनीकी प्रगति की ओर बढ़ रहा है, वहीं दूसरी ओर आत्मचिंतन और भावनाओं को समझने की ओर भी अग्रसर हो रहा है। वर्तमान समय में हमारा जीवन तेजी से बदल रहा है। नई तकनीकों का विकास हो रहा है और हमारे जीवन को आसान बनाने के लिए नए-नए उपकरण बनाए जा रहे हैं। इस सदी की दो प्रमुख अवधारणाएँ हैं: कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI)। दोनों का समाज में महत्वपूर्ण स्थान है, परंतु इनके बीच गहरा अंतर भी है। एक मशीनों से जुड़ी है, तो दूसरी मनुष्यों की आत्मा से। कृत्रिम बुद्धिमत्ता मशीनों को 'स्मार्ट' बनाती है, परंतु भावनात्मक बुद्धिमत्ता मनुष्यों को 'संवेदनशील' बनाती है। जब हम इन दोनों को एक साथ समझते हैं, तो स्पष्ट हो जाता है कि तकनीकी ज्ञान और भावनात्मक समझ का संतुलन ही हमें एक सफल और सहृदय समाज की ओर ले जाता है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता क्या है?

भावनात्मक बुद्धिमत्ता एक ऐसी शक्ति है जो मनुष्य को रिश्तों में, कार्यस्थल पर, समाज में और जीवन के हर क्षेत्र में सफल बनाती है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता वह क्षमता है जिसमें व्यक्ति अपने और दूसरों के भावनात्मक पहलुओं को समझता है, उन्हें पहचानता है, नियंत्रित करता है और सकारात्मक रूप से उपयोग करता है। यह हमारे सामाजिक जीवन, कार्यस्थल, पारिवारिक संबंधों और मानसिक स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता के 5 मुख्य घटक (डैनियल गोलेमैन के अनुसार):

1. **आत्म-चेतना (Self-awareness):** अपनी भावनाओं को पहचानने और समझने की क्षमता। उदाहरण-जब आप गुस्से में होते हैं, तो आपको यह महसूस होता है कि आप गुस्से में हैं और क्यों।
2. **सहानुभूति (Empathy):** दूसरों की भावनाओं को समझने और उनके दृष्टिकोण से सोचने की क्षमता।
3. **सामाजिक कौशल (Social Skills):** संबंध बनाना, लोगों से जुड़ना और प्रभावी ढंग से संवाद करना।
4. **आत्म-नियंत्रण (Self-regulation):** भावनाओं को उचित दिशा में नियंत्रित करने की योग्यता। उदाहरणत:

गुस्सा आने पर भी शांत रहना और विवेकपूर्ण निर्णय लेना।

5. **प्रेरणा (Motivation):** अपने लक्ष्यों के प्रति उत्साही और समर्पित रहना।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता क्या है?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता कंप्यूटर विज्ञान की वह शाखा है, जिसका उद्देश्य ऐसी मशीनों और प्रोग्रामों का निर्माण करना है जो मनुष्यों की तरह सोच सकें, निर्णय ले सकें और समस्याएँ हल कर सकें। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आज चिकित्सा, बैंकिंग, शिक्षा, सुरक्षा, व्यापार और मनोरंजन जैसे लगभग हर क्षेत्र में इस्तेमाल हो रही है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने मानव श्रम को कम किया है, कार्यों की गति बढ़ाई है और जटिल समस्याओं का समाधान निकाला है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के मुख्य क्षेत्र:

1. **मशीन लर्निंग :** कंप्यूटर को तथ्यों से सीखने की क्षमता प्रदान करना।
2. **नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग :** मशीनों को मनुष्यों की भाषा समझने और उस पर प्रतिक्रिया देने की क्षमता प्रदान करना।
3. **रोबोटिक्स :** ऐसे रोबोट बनाना जो कार्य कर सकें, बातचीत कर सकें और निर्णय ले सकें।
4. **एक्सपर्ट सिस्टम्स :** किसी विशेष क्षेत्र के विशेषज्ञ की तरह कार्य करने वाले प्रोग्राम।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बीच अंतर

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) प्रणालियों को अनुभव से तथ्यों में स्वरूप की पहचान को स्वचालित रूप से सीखने और बेहतर बनाने की क्षमता प्रदान करती है। इसमें ऐसे एल्गोरिदम शामिल होते हैं जो कुछ खास धागों की पहचान करते हैं जो जानकारी को लगातार परिष्कृत करते हैं और बेहतर वैयक्तिकरण प्रदान करते हैं। यह कंप्यूटर को बिना किसी स्पष्ट प्रोग्रामिंग के कार्य करने का विज्ञान है। मशीन लर्निंग एल्गोरिदम में सांख्यिकीय तकनीकें शामिल होती हैं जो कंप्यूटर को विभिन्न कार्यों को 'सीखने' और तदनुसार कार्य करने की क्षमता प्रदान करती हैं। भावनात्मक बुद्धिमत्ता और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बीच अंतर यहीं निहित है। दूसरी ओर, भावनात्मक बुद्धिमत्ता विभिन्न संज्ञानात्मक और भावात्मक प्रक्रियाओं को उत्तेजित करके मानवीय क्षमता पर ध्यान केंद्रित करती है जो व्यक्ति को अपनी भावनाओं को बेहतर ढंग से समझने और नियंत्रित करने और सहानुभूति के साथ संबंधों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने में मदद करती है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता का महत्व

1. **रिश्तों में सुधार:** भावनात्मक बुद्धिमत्ता व्यक्ति को दूसरों की भावनाएँ समझने और उनके अनुसार व्यवहार करने की क्षमता देती है, जिससे रिश्तों में मधुरता आती है।
2. **मानसिक स्वास्थ्य:** व्यक्ति अपने अंदर की भावनाओं को समझकर तनाव, चिंता और निराशा से बेहतर तरीके से निपट सकता है।
3. **कार्यस्थल पर सफलता:** एक अच्छे नेतृत्वकर्ता में भावनात्मक बुद्धिमत्ता होना अनिवार्य है। वह अपनी समूह को समझ सकता है, प्रेरित कर सकता है और विवादों को सुलझा सकता है।
4. **समाज में सहिष्णुता:** जब लोग एक-दूसरे की भावनाओं को समझते हैं, तो हिंसा, भेदभाव और वैमनस्य की संभावना कम हो जाती है।
5. **व्यक्तिगत जीवन में संतुलन :** व्यक्ति अपने भावों को बेहतर तरीके से समझकर जीवन में संतुलन बनाए रख सकता है।
6. **शिक्षा में योगदान :** विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और परस्पर संबंधों को बेहतर बनाने में सहायक।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का महत्व

1. **उत्पादकता में वृद्धि:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता से कार्य तेजी से और सटीकता से होते हैं। इससे समय की बचत होती है।

2. **स्वास्थ्य सेवा में क्रांति:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता अब बीमारियों का पता लगाने, इलाज का सुझाव देने और रोगी की देखभाल में सहायता कर रही है।

3. **शिक्षा में व्यक्तिगत सीख:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित ऐप्स विद्यार्थियों की समझ के अनुसार उन्हें पढ़ाते हैं।

4. **सुरक्षा और निगरानी:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता कैमरों और प्रणालियों के माध्यम से सुरक्षा प्रणाली को मजबूत कर रही है।

5. **स्वचालन :** औद्योगिक कार्यों में तेजी और सटीकता प्रदान कर रही है।

6. **सेवा क्षेत्र:** चैटबॉट्स और ग्राहक सेवा में सहायता कर रही है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सीमाएँ और चुनौतियाँ व भावनात्मक बुद्धिमत्ता की अनिवार्यता

- **भावनात्मक समझ की कमी:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता सहानुभूति या मानवीय संवेदना को नहीं समझ सकती। इसमें समय और आत्मचिंतन की आवश्यकता होती है। हर व्यक्ति में यह क्षमता समान रूप से नहीं पाई जाती। भावनाओं का असंतुलन निर्णय क्षमता को प्रभावित कर सकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता किसी की पीड़ा, खुशी या आंसुओं को नहीं समझ सकती। उदाहरण के तौर पर एक डॉक्टर की सहानुभूति कृत्रिम बुद्धिमत्ता से कहीं अधिक मूल्यवान होती है।

- **नैतिकता की समस्या:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता बिना नैतिक विचार किए निर्णय ले सकती है, जो नुकसानदायक हो सकती है। कई बार निर्णय केवल लॉजिक पर नहीं, नैतिकता और भावनात्मक समझ पर लिए जाते हैं - जैसे किसी बच्चे को डाँटना या समझाना।

- **नौकरियों पर प्रभाव:** कई क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कारण लोगों की नौकरियाँ समाप्त हो रही हैं।

- **डेटा पर निर्भरता:** यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता को गलत या पक्षपातपूर्ण डेटा दिया जाए, तो उसके निर्णय भी गलत हो सकते हैं।

- **रचनात्मकता और सहानुभूति:** भावनात्मक बुद्धिमत्ता से युक्त व्यक्ति कल्पनाशील होते हैं। जबकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता अभी तक केवल पूर्व ज्ञान पर आधारित कार्य करती है।

मानव संबंधों की गहराई: रिश्ते केवल शब्दों और कार्यों से नहीं बनते, बल्कि भावनाओं से बनते हैं, जो केवल मनुष्यों में होती हैं।

क्या कृत्रिम बुद्धिमत्ता में भावनात्मक बुद्धिमत्ता लाई जा सकती है?

वर्तमान में शोधकर्ता "भावनात्मक कृत्रिम बुद्धिमत्ता" या "भावनात्मक संगणना" पर कार्य कर रहे हैं, जिसमें मशीनें भावनाओं को पहचानने और प्रतिक्रिया देने में सक्षम बनाई जा रही हैं। उदाहरणस्वरूप:

- रोबोट जो चेहरे के भाव या आवाज़ के उतार-चढ़ाव से भावनाएँ पहचान सकते हैं।
- ग्राहक सेवा चैटबॉट्स जो उपयोगकर्ता के मनोदशा के अनुसार प्रतिक्रिया देते हैं।

हालांकि, यह समझना जरूरी है कि मशीनें केवल "भावनात्मक प्रतिक्रिया" दे सकती हैं, परंतु वह भावनाएँ "अनुभव" नहीं कर सकती, क्योंकि उसमें आत्मचेतना और मानवीय संवेदना का अभाव होता है।

भविष्य की दृष्टि: सहयोग, प्रतिस्पर्धा नहीं

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता को एक-दूसरे का विकल्प नहीं, बल्कि पूरक माना जाना चाहिए। भविष्य का आदर्श समाज वह होगा जहाँ तकनीक मानवता का सहायक बने, न कि उसका प्रतिस्थापन। हमें ऐसे एआई सिस्टम चाहिए जो इंसानों के निर्णयों को बेहतर बनाएँ, लेकिन अंतिम निर्णय का अधिकार भावनात्मक रूप से समझदार इंसानों के पास ही रहे।

भविष्य की दुनिया में, जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता हर क्षेत्र में मौजूद होगी, वहाँ भावनात्मक बुद्धिमत्ता का महत्व और बढ़ जाएगा। ऐसे नेता, शिक्षक, डॉक्टर, काउंसलर या कर्मचारी जो दूसरों की भावनाओं को समझ सकते हैं – वे अधिक प्रभावी और सफल होंगे। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की वृद्धि के साथ-साथ मानवीय भावनाएँ अधिक महत्वपूर्ण हो जाएँगी क्योंकि तकनीक के साथ 'संवेदना' की जरूरत भी हमेशा बनी रहेगी।

मानवता के लिए कौन अधिक महत्वपूर्ण है?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने निश्चित रूप से मानव जीवन को सरल और अधिक सुसंगत बनाया है, लेकिन भावनात्मक बुद्धिमत्ता ही हमें 'मानव' बनाती है। कठिन परिस्थितियों में सहानुभूति, करुणा, प्रेम और सामाजिक समझ कृत्रिम बुद्धिमत्ता कभी भी पूर्ण रूप से नहीं दे सकती। यदि हम केवल तकनीक पर निर्भर हो जाएँ और भावनात्मक बुद्धिमत्ता को नजरअंदाज करें, तो समाज में संवेदनशीलता और सहयोग की भावना क्षीण हो सकती है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता व कृत्रिम बुद्धिमत्ता: साथ मिलकर बेहतर दुनिया

कल्पना कीजिए एक ऐसा डॉक्टर जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहायता से रोग पहचानता है और भावनात्मक बुद्धिमत्ता की सहायता से मरीज को दिलासा देता है या एक शिक्षक जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता से पढ़ाई करवाता है लेकिन भावनात्मक बुद्धिमत्ता से छात्रों को प्रेरणा देता है।

संभावना:

जब भावनात्मक बुद्धिमत्ता और कृत्रिम बुद्धिमत्ता मिलते हैं, तो ऐसा समाज बनता है जो तकनीकी रूप से सक्षम और मानवीय रूप से संवेदनशील होता है। यही संतुलन भविष्य का सही मार्ग है।

भविष्य की दिशा

भविष्य में हमें भावनात्मक बुद्धिमत्ता और कृत्रिम बुद्धिमत्ता दोनों के विकास पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता होगी। हमें नई तकनीकों का विकास करना होगा जो हमें अपने जीवन में बेहतर निर्णय लेने में मदद करें और हमारे रिश्तों को मजबूत बनाएं। हमें यह भी सुनिश्चित करना होगा कि हमारी तकनीकें हमारे मूल्यों और नैतिकता के अनुरूप हों और हमें अपने जीवन को बेहतर बनाने में मदद करें। इससे हम अपने जीवन को अधिक अर्थपूर्ण और संतुष्ट बना सकते हैं।

निष्कर्ष

भावनात्मक बुद्धिमत्ता और कृत्रिम बुद्धिमत्ता दोनों के अपने महत्व हैं। भावनात्मक बुद्धिमत्ता हमें अपने जीवन में बेहतर निर्णय लेने में मदद करती है और हमारे रिश्तों को मजबूत बनाती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमें तथ्यों-आधारित निर्णय लेने में मदद करती है जिसे जीवन को आसान बनाने के लिए उपयोग किया जा सकता है। हमें दोनों के बीच संतुलन बनाने की आवश्यकता है और अपने जीवन में दोनों का उपयोग करने के तरीके खोजने होंगे। इससे हम अपने जीवन को बेहतर बना सकते हैं और अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता भविष्य में अनेक कार्यों को सम्पन्न कर सकती है लेकिन वह इंसान की भावनाओं, संवेदनाओं और नैतिक निर्णयों को कभी नहीं समझ पाएगी। इसलिए हमें तकनीक के साथ-साथ भावनात्मक समझ, सहानुभूति और सामाजिक कौशल को भी विकसित करना होगा।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता वह धागा है जो तकनीक और मानवता को जोड़ता है।

इसलिए एआई के युग में भी, ईआई की आवश्यकता और मूल्य कभी कम नहीं होंगे।

"मैं उन लोगों में से हूँ, जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है।"

– लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

रचना कुमारी चौधरी
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय, वाराणसी

नैतिकता और संवेदनशीलता: कृत्रिम बुद्धिमत्ता बनाम मानव संसाधन-एक समकालीन विश्लेषण

21वीं सदी में मानव सभ्यता एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है, जहाँ विज्ञान और तकनीक की प्रगति ने हमारे जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया है। वर्तमान युग तकनीकी क्रांति का युग है। मानव सभ्यता ने जिस गति से विज्ञान और तकनीक में प्रगति की है, वह विस्मयकारी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस या एआई) इस विकास की पराकाष्ठा मानी जा सकती है। एक समय था जब मशीनें केवल मानव के आदेशों पर कार्य करती थीं, परंतु अब मशीनें स्वयं निर्णय लेने लगी हैं। ऐसे में यह प्रश्न उठता है कि क्या ये निर्णय केवल तर्कपूर्ण हैं या नैतिक भी और क्या इन निर्णयों में संवेदनशीलता की कोई भूमिका है?

वहीं दूसरी ओर, मानव संसाधन—यानी कि मानव स्वयं जिसमें नैतिकता, संवेदना, अनुभव, संस्कृति, परंपरा और भावनाओं का समावेश होता है वह न केवल निर्णय करता है बल्कि उन निर्णयों के प्रभावों को भी समझता है।

यह लेख इसी द्वंद्व का विवेचन करता है: क्या कृत्रिम बुद्धिमत्ता नैतिकता और संवेदनशीलता में मानव संसाधन का स्थान ले सकती है?

मानव संसाधन: केवल कर्मचारी नहीं, मूल्यवान संवेदन

मानव संसाधन किसी भी संगठन या समाज का मूल स्तंभ होता है। मानव संसाधन का अर्थ केवल किसी संगठन में कार्यरत व्यक्ति नहीं, बल्कि वह व्यक्ति है जो अपनी बुद्धि, भावना, अनुभव, संवेदना और निर्णय क्षमता के साथ कार्य करता है। मानव में यह क्षमता होती है कि वह परिस्थिति की सूक्ष्मताओं को समझे दूसरे के भावों को पढ़े और सहानुभूति के साथ व्यवहार करे।

मानव की नैतिक विशेषताएँ:

- **अंतःकरण की आवाज:** मानव अपने विवेक और अंतरात्मा के आधार पर निर्णय लेता है।
- **संवेदनशीलता और करुणा:** किसी की पीड़ा देखकर उसकी सहायता करना केवल मशीन से संभव नही है।
- **सामाजिक उत्तरदायित्व:** मानव अपने निर्णयों में समाज, संस्कृति और भविष्य की पीढ़ियों का ध्यान रखता है।

इन गुणों को न तो कोड किया जा सकता है और न ही डेटा से सीखा जा सकता है।

उदाहरणस्वरूप, एक डॉक्टर जब किसी मरीज का इलाज करता है तो वह केवल उसकी बीमारी नहीं देखता बल्कि उसकी मानसिक स्थिति, पारिवारिक पृष्ठभूमि और आर्थिक स्थिति को भी ध्यान में रखता है। यह समग्र

दृष्टिकोण केवल एक संवेदनशील और नैतिक रूप से सजग मानव ही अपना सकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता: दक्षता का उदाहरण, पर क्या भावनाओं का भी?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता को इस प्रकार विकसित किया गया है कि वह विशाल डेटा का विश्लेषण कर निर्णय ले सके। आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता निम्न क्षेत्रों में उपयोगी सिद्ध हो रहा है:

- स्वास्थ्य सेवा (निदान, रोबोटिक सर्जरी)
- वित्त (फ्रॉड डिटेक्शन, निवेश सलाह)
- ग्राहक सेवा (चैटबॉट, वॉयस असिस्टेंट)
- शिक्षा (व्यक्तिकृत शिक्षा प्रणाली)

कृत्रिम बुद्धिमत्ता तर्क आधारित निर्णय लेने में तेज़, विश्वसनीय और सुसंगत है, परंतु यह केवल वही समझता है जो उसे सिखाया गया हो।

उदाहरणस्वरूप, चैटबॉट्स ग्राहक सेवा में संवाद कर सकते हैं, रोबोट सर्जरी कर सकते हैं और एल्गोरिदम डेटा के आधार पर नीतियाँ बना सकते हैं, परंतु यह समझना आवश्यक है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता की यह समझ केवल डेटा और प्रोग्रामिंग पर आधारित होती है। उसकी संवेदनाएँ सक्रिय नहीं, बल्कि अनुकरणीय होती हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सीमाएँ:

- **भावनात्मक अभाव:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता केवल भावनाओं की नकल कर सकती है, उन्हें महसूस नहीं कर सकती।
- **नैतिक द्वंद्वों की समझ नहीं:** नैतिकता के संदर्भ और जटिलताओं को कृत्रिम बुद्धिमत्ता नहीं समझ सकती।
- **पूर्वाग्रह का खतरा:** यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता को त्रुटिपूर्ण या पक्षपातपूर्ण डेटा से प्रशिक्षित किया जाए, तो उसके निर्णय भी पूर्वाग्रही होंगे।
- **उत्तरदायित्व की अस्पष्टता:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता के गलत निर्णयों की जिम्मेदारी किसकी होगी, यह स्पष्ट नहीं होता

नैतिकता: एक स्थिर नहीं, संदर्भ आधारित मूल्य

नैतिकता कोई निश्चित सूत्र नहीं है। यह संदर्भ, समय, स्थान और संस्कृति के अनुसार बदलती रहती है। उदाहरण के लिए:

- किसी देश में अंगदान नैतिक कृत्य है, वहीं कुछ समाजों में इसे अनैतिक माना जा सकता है।
- युद्ध में दुश्मन का वध एक कर्तव्य हो सकता है, जबकि सामान्य स्थिति में वही कार्य हत्या कहलाता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता इस प्रकार की सापेक्ष नैतिकता को नहीं समझ सकती क्योंकि वह नियम आधारित कार्य करती है, जबकि नैतिक निर्णय अक्सर नियमों से परे विवेक पर आधारित होते हैं।

संवेदनशीलता: कृत्रिम बुद्धिमत्ता का सबसे बड़ा अभाव

संवेदनशीलता वह क्षमता है जो किसी अन्य व्यक्ति की भावनात्मक स्थिति को समझकर प्रतिक्रिया देती है। यही मानव संबंधों की नींव है।

संवेदनशील मानव बनाम संवेदनहीन मशीन

पक्ष	मानव संसाधन	कृत्रिम बुद्धिमत्ता
भावनात्मक समझ	स्वाभाविक, अनुभव आधारित	अनुकरणीय, प्रोग्राम आधारित
सहानुभूति	हृदय से अनुभवित	केवल संवादात्मक
निर्णय प्रक्रिया	विवेक आधारित	तथ्यों आधारित
सामाजिक समन्वय	अनुकूलनीय और सांस्कृतिक स्थिर और सीमित	स्थिर और सीमित

उदाहरण:

- कोविड-19 महामारी के दौरान लाखों फ्रंटलाइन वर्कर्स ने अपनी जान की परवाह किए बिना सेवा दी। एआई ऐसी त्याग भावना नहीं दिखा सकता है।
- एक शिक्षक जब किसी छात्र को व्यक्तिगत रूप से मार्गदर्शन देता है, तो वह केवल ज्ञान नहीं देता बल्कि संवेदनशीलता और नैतिक जिम्मेदारियां भी निभा रहा होता है।
- न्यायपालिका में एक जज जब किसी अपराधी की पृष्ठभूमि, परिस्थितियाँ और पुनर्वास की संभावना को देखकर सजा निर्धारित करता है, तो वह कृत्रिम बुद्धिमत्ता से अधिक न्यायिक विवेक दर्शाता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के नैतिक खतरे

- **मानव संसाधन को खतरा:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कारण कई नौकरियाँ जाने का खतरा बना हुआ है, जिससे बेरोजगारी बढ़ सकती है।
- **डीपफेक तकनीक:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता से झूठी तस्वीर और झूठे वीडियो बनाकर किसी भी व्यक्ति की छवि को हानि पहुंचाया जा सकता है।
- **पक्षपात:** यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता को पूर्वाग्रही तथ्यों से प्रशिक्षित किया गया तो वह जाति, लिंग या वर्ग के आधार पर भेदभाव कर सकता है।
- **डेटा की गोपनीयता:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता बड़ी मात्रा में तथ्य एकत्रित करता है एवं उसे संसाधित करता है, जिससे तथ्यों की गोपनीयता एवं सुरक्षा का खतरा बना हुआ है, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित निगरानी तंत्र व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर संकट बन सकता है।
- **सामाजिक बदलाव:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग दुष्प्रचार एवं गलत सूचनाएं फैलाने के लिए किया जा सकता है, जो समाज में विभाजन एवं अस्थिरता का कारण बन सकती है।

मानव विवेक का क्षय:

- कृत्रिम बुद्धिमत्ता मनुष्य की बुद्धि एवं विवेक को कमजोर एवं निष्क्रिय बना सकती है, क्योंकि इसका अत्यधिक उपयोग या पूरी तरह से इस पर निर्भर रहने से हमारी सोचने समझने की शक्ति क्षीण हो सकती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की नैतिकता उसकी प्रोग्रामिंग पर निर्भर होती है, जो मानव द्वारा नियंत्रित है-यदि प्रोग्रामिंग में नैतिक दोष है, तो एआई भी उसी प्रकार व्यवहार करेगा।

मानव संसाधन: संगठन की आत्मा

जब हम कार्यस्थल की बात करते हैं, तो संगठन की संस्कृति, प्रेरणा, सहयोग, विश्वास और लचीलापन केवल मानव संसाधन से ही आता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता उत्पादकता बढ़ा सकती है, परंतु समूह भावना, विश्वास और प्रेरणा नहीं पैदा कर सकती ।

मानव संसाधन की विशेषताएँ:

- कठिन समय में सहकर्मियों का सहयोग
- नेतृत्व और मार्गदर्शन
- संगठन के मूल्यों की रक्षा
- सामाजिक सरोकार में भागीदारी

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव का संतुलन: भविष्य केवल कृत्रिम बुद्धिमत्ता या केवल मानव के बल पर नहीं चलेगा, बल्कि दोनों के संतुलित समन्वय से चलेगा। इसका लक्ष्य होगा - तकनीकी दक्षता और मानवीय संवेदना का समुचित मिश्रण।

आवश्यक उपाय:

- कृत्रिम बुद्धिमत्ता को नैतिक दिशानिर्देशों के अधीन लाना।
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता की जवाबदेही तय करना।
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता में मानवीय मूल्यबोध का समावेश।
- मानव अंतिम निर्णायक रहे।
- संवेदनशील नेतृत्व का प्रशिक्षण।

शिक्षा, साहित्य और संस्कृति में भूमिका

कृत्रिम बुद्धिमत्ता भाषा समझ सकती है, पर उसकी अंतरात्मा नहीं होती। वह कविता पढ़ सकती है, पर उसमें समाहित भावनाओं को महसूस नहीं कर सकती। कोई कवि जब वेदना से कविता रचता है या कोई लेखक जब समाज की पीड़ा को शब्द देता है, तो वह कार्य संवेदना का परिणाम होता है न कि एल्गोरिदम का।

इसी तरह, संस्कृति का संरक्षण केवल तथ्यों से संभव नहीं, उसके अनुभव और भावनात्मक जुड़ाव से होता है।

निष्कर्ष : कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानवता के लिए वरदान है यदि उसका प्रयोग विवेकपूर्ण, नैतिक और सीमित हो। यह मानव के सहयोगी की भूमिका निभा सकती है, परंतु मानव का विकल्प नहीं बन सकती।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उद्देश्य होना चाहिए मानव के निर्णय को सशक्त बनाना, ना कि उसे प्रतिस्थापित करना।

नैतिकता और संवेदनशीलता की नींव पर ही सभ्यता टिकी रहती है। यदि हम केवल तर्क और गणना से समाज चलाने लगें, तो हम मशीनों की दुनिया में जीवित मानव की जगह यंत्रवत जीव बनकर रह जाएँगे।

अतः हमें भविष्य को इस दृष्टि से गढ़ना होगा, जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता की शक्ति और मानव की भावना साथ चलें तभी हम तकनीक और मानवता दोनों का सही उपयोग कर पाएँगे।

शिक्षा और प्रशिक्षण में कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं मानव संसाधन की भूमिका

ओम प्रकाश नारायण
वरिष्ठ प्रबंधक (सुरक्षा)
अंचल कार्यालय, बेगूसराय

वर्तमान युग तकनीकी प्रगति का युग है, जहां कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव संसाधन शिक्षा और प्रशिक्षण के क्षेत्र को एक नई दिशा प्रदान कर रहे हैं। 21वीं सदी के दूसरे दशक में शिक्षा और प्रशिक्षण के स्वरूप में एक क्रांतिकारी बदलाव देखा गया है। तकनीकी विकास, विशेषकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव संसाधन प्रबंधन ने न केवल शैक्षिक पद्धतियों को प्रभावित किया है, बल्कि भविष्य की कार्यशैली को भी पुनःपरिभाषित किया है। शिक्षा और प्रशिक्षण के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं मानव संसाधन के योगदान, चुनौतियाँ तथा संभावनाओं का विश्लेषण निम्नानुसार है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका: शिक्षा का आधुनिक चेहरा

1. वैयक्तिकृत अधिगम

- कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित एल्गोरिदम छात्रों के अध्ययन व्यवहार, गति और समस्याओं का विश्लेषण कर उन्हें व्यक्तिगत रूप से शिक्षण प्रदान करते हैं तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित प्रणाली छात्रों की रुचियों और समझ के स्तर का विश्लेषण करती है।
- **उदाहरण:** चैटबॉट आधारित ट्यूटर, जो छात्र के प्रश्नों के अनुसार जवाब देता है।

2. शिक्षकों के लिए सहायक उपकरण

- मूल्यांकन प्रणाली, रिपोर्टिंग और कक्षा प्रबंधन जैसे कार्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता की मदद से सरल हो गए हैं।
- शिक्षक अब अधिक रचनात्मक शिक्षण शैली अपना सकते हैं।

3. स्मार्ट कंटेंट निर्माण

- पाठ्यपुस्तकों के डिजिटल संस्करण, वीडियो लेक्चर और क्विज कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से तैयार किए जाते हैं।
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता ऑटोमेशन के माध्यम से पाठ्य सामग्री अद्यतन भी संभव है।

4. आर्टिफिशियल इमोशनल इंटेलिजेंस

- कुछ कृत्रिम बुद्धिमत्ता टूल्स छात्रों की भावनात्मक स्थिति का भी विश्लेषण कर सकते हैं।
- इससे मानसिक स्वास्थ्य सहायता देने में भी मदद होती है।

5. मूल्यांकन एवं फीडबैक

- कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित उपकरण छात्रों के उत्तरों का विश्लेषण कर त्वरित और निष्पक्ष फीडबैक प्रदान करते हैं।
- स्वचालित मूल्यांकन प्रणाली से शिक्षकों का समय बचता है और सटीकता बढ़ती है।

6. डिजिटल कंटेंट निर्माण

- कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से इंटरैक्टिव वीडियो, एनिमेशन और क्विज़ जैसे कंटेंट का निर्माण संभव है।
- यह शिक्षण को अधिक आकर्षक और प्रभावशाली बनाता है।

7. विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए समर्थन

- कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित सिस्टम दृष्टिबाधित, श्रवण बाधित या अन्य विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को सहारा प्रदान करते हैं।

मानव संसाधन की भूमिका: प्रभावी प्रशिक्षण का स्तंभ

1. प्रतिभा विकास

मानव संसाधन विभाग कौशल उन्नयन कार्यक्रमों का संचालन

करता है, जो कर्मचारियों को नवीनतम तकनीकों से परिचित कराते हैं।

- कृत्रिम बुद्धिमत्ता टूल्स की जानकारी देना अब प्रशिक्षण का आवश्यक भाग है।

2. प्रशिक्षण की रणनीति

- कर्मचारियों की दक्षताओं के आधार पर मॉड्यूल विकसित किए जाते हैं।
- ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म के चयन, निगरानी और मूल्यांकन करने में मानव संसाधन की भूमिका अहम है।
- मानव संसाधन विभाग डेटा एनालिटिक्स और फीडबैक के आधार पर प्रशिक्षण की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करता है।

3. सहयोग एवं टीमवर्क को बढ़ावा

- मानव संसाधन प्रशिक्षण के ज़रिए टीमों में बेहतर संवाद और सहयोग की संस्कृति को प्रोत्साहन मिलता है।
- मानव संसाधन टीम सहकारी वातावरण बनाकर समूह में सीखने को बढ़ावा देती है।
- विविधता और समावेशिता को भी प्रोत्साहन मिलता है।

4. नेतृत्व और व्यवहारिक प्रशिक्षण

- नेतृत्व कौशल, समय प्रबंधन और संघर्ष समाधान जैसे 'सॉफ्ट स्किल्स' के प्रशिक्षण को बढ़ावा दिया जाता है।

5. कौशल उन्नयन एवं क्षमता निर्माण

- नई तकनीकों और ट्रेंड्स से कर्मचारियों को अवगत कराने हेतु नियमित प्रशिक्षण आयोजित किए जाते हैं।
- सॉफ्ट स्किल जैसे नेतृत्व क्षमता और संवाद कौशल विकसित किए जाते हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव संसाधन का एकीकरण

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव संसाधन मिलकर एक सशक्त प्रशिक्षण प्रणाली का निर्माण करते हैं:

- डेटा एनालिटिक्स के ज़रिए मानव संसाधन विभाग के कर्मचारी प्रदर्शन का मूल्यांकन कर सकता है।
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम मानव संसाधन विभाग को प्रशिक्षण प्रभावशीलता समझने में मदद करता है।
- भविष्य की आवश्यकता के अनुसार शिक्षण योजनाएं तैयार की जाती हैं।
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव संसाधन मिलकर एक ऐसा मॉडल तैयार करते हैं जो कुशल, अनुकूल और गतिशील होता है।
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित अधिगम प्रबंधन प्रणाली को मानव संसाधन विभाग प्रशिक्षण मॉनिटरिंग हेतु उपयोग करता है।
- कर्मचारियों के प्रदर्शन का विश्लेषण कर उन्हें उपयुक्त प्रशिक्षण दिया जाता है।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य

- अमेरिका, जापान और यूरोपीय देशों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित शिक्षा और मानव संसाधन तकनीकों का व्यापक प्रयोग हो रहा है।
- भारत में 'डिजिटल इंडिया' और 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' के तहत कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं मानव संसाधन का सहयोग शिक्षा क्षेत्र में बढ़ाया जा रहा है।
- सरकारी और निजी संस्थान अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं मानव संसाधन के समन्वय से कौशल विकास पर केंद्रित हो रहें हैं।

चुनौतियाँ

- डेटा सुरक्षा और गोपनीयता।
- तकनीकी साक्षरता की कमी।
- शिक्षा में मानवीय संवेदनाओं की आवश्यकता।
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा गलत या पक्षपाती विश्लेषण की संभावना।

निष्कर्ष : कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव संसाधन का सहयोग शिक्षा और प्रशिक्षण को नई दिशा दे सकता है। जहां कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षण को स्मार्ट और अनुकूल बनाता है, वहीं मानव संसाधन इसे मानवीय और रणनीतिक बनाता है। दोनों का संतुलित उपयोग ही शिक्षा के भविष्य को उज्ज्वल बना सकता है।

एक मुलाकात

डॉ. सुदेष्णा सरकार
प्राध्यापिका (कृत्रिम बुद्धिमत्ता विभाग)
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान

डॉ. सुदेष्णा सरकार, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर में कंप्यूटर विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग की प्रख्यात प्राध्यापक हैं, जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में उत्कृष्टता केंद्र की संस्थापक अध्यक्षा भी रही हैं।

आईआईटी खड़गपुर से बी.टेक और पीएच.डी. तथा कैलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले से एम.एस. की उपाधियाँ प्राप्त कर उन्होंने तकनीकी शिक्षा और अनुसंधान में एक प्रेरणास्पद यात्रा तय की है। उनका शोध कार्य मुख्यतः मशीन लर्निंग, नैसर्गिक भाषा संसाधन और अल्प-संसाधन भारतीय भाषाओं के लिए बहुभाषिक तकनीकों के विकास पर केंद्रित है। उन्होंने राष्ट्रीय स्तर की कई परियोजनाओं का नेतृत्व किया है जिनमें भाषा अनुवाद, सूचना अभिगम और घटना निष्कर्षण जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान शामिल है।

उनका शिक्षण दृष्टिकोण नवाचार, नैतिकता और समावेशन के संतुलन पर आधारित है, जो तकनीक को मानवता के हित में दिशा देने का कार्य करता है। 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं मानव संसाधन' के परिपेक्ष्य में डॉ. सुदेष्णा सरकार से आभाषी संवाद के संपादित अंश प्रस्तुत है।

1. सर्वप्रथम आप अपने जन्मस्थान आरंभिक शिक्षा-दीक्षा और कैरियर के संबंध में बताएं।

भारत की सांस्कृतिक राजधानी कोलकाता की साहित्यिक गलियों में मेरा बचपन बीता, जहाँ हर मोड़ पर इतिहास की गूंज और आधुनिकता की झलक मिलती है। मेरी प्रारंभिक शिक्षा 'साउथ प्वाइंट हाई स्कूल' जैसे प्रतिष्ठित शिक्षालय में हुई, जिसने मुझे न केवल ज्ञान की गहराइयों से परिचित कराया, बल्कि विविधताओं से भरे अनुभवों का भी साक्षात्कार कराया।

विद्यालयी जीवन की समाप्ति के साथ ही मेरी यात्रा ने एक नया मोड़ लिया और मुझे आईआईटी खड़गपुर तक पहुँचाया, जहाँ मैंने कंप्यूटर विज्ञान एवं अभियांत्रिकी में बी.टेक की उपाधि प्राप्त की। ज्ञान की खोज में मेरी अगली मंज़िल बनी कैलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले, जहाँ मैंने कंप्यूटर विज्ञान में स्नातकोत्तर (एम.एस.) किया। विदेशी धरती पर ज्ञानार्जन के बाद मेरा हृदय पुनः अपनी जन्मभूमि की ओर आकर्षित हुआ और मैंने आईआईटी खड़गपुर में शोधकार्य करते हुए पीएचडी की उपाधि प्राप्त की।

2. आपने कंप्यूटर विज्ञान और विशेष रूप से कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र को अपने कैरियर के लिए कैसे चुना?

जब मैंने सन् 1985 में आईआईटी खड़गपुर में बी.टेक की शुरुआत की, उस समय कंप्यूटर विज्ञान एक नवोदित शास्त्र था, जो गणितीय तर्क और तार्किक संरचना की गहराइयों से उद्धत था। कृत्रिम बुद्धिमत्ता मेरे लिए केवल तकनीकी दक्षता का माध्यम नहीं, बल्कि सोचने और समझने की एक नई शैली थी — एक ऐसी यात्रा जिसमें हर मोड़ पर जिज्ञासा, चुनौती और सृजनशीलता की चमक थी। यही कारण है कि मैंने इसे अपने जीवन की दिशा और उद्देश्य के रूप में चुना।

3. आपकी शिक्षा यात्रा आईआईटी खड़गपुर से शुरू होकर यूसी बर्कले तक पहुँची — इस अनुभव ने आपके शोध दृष्टिकोण को कैसे प्रभावित किया?

मेरी शिक्षा यात्रा एक प्रेरणादायक गाथा रही, जो आईआईटी खड़गपुर से आरंभ होकर कैलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले तक पहुँची। इस मार्ग ने मेरे शोध दृष्टिकोण को गहराई, विविधता और वैश्विक दृष्टि प्रदान की। शुरुआत में मेरी रुचि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उन मूलभूत प्रश्नों में थी, जो मशीनों को संभावित समाधानों के विशाल अंतरिक्ष में तार्किक रूप से विचरण करने और निष्कर्ष निकालने की क्षमता प्रदान करते हैं। खोज एल्गोरिद्म और स्वचालित तर्क प्रणालियाँ मेरे लिए एक बौद्धिक आकर्षण थीं।

बर्कले में बिताए गए समय ने मेरे दृष्टिकोण को एक नई दिशा दी। वहाँ की अकादमिक संस्कृति, शोध की स्वतंत्रता और नवाचार की खुली हवा ने मुझे आँकड़ों पर आधारित ए.आई. की ओर उन्मुख किया। जैसे-जैसे ए.आई. में

सांख्यिकीय क्रांति ने गति पकड़ी, यह स्पष्ट हुआ कि यदि मशीनें वास्तव में बुद्धिमान बननी हैं, तो उन्हें अनुभव से अर्थात् तथ्यों से सीखना होगा। इस बोध ने मुझे मशीन लर्निंग की ओर अग्रसर किया, जहाँ हर एल्गोरिद्म एक नई कहानी कहता है, हर मॉडल एक नई संभावना खोलता है।

4. भारतीय भाषाओं के लिए एनएलपी (नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग) में आपके कार्य को लेकर क्या चुनौतियाँ और संभावनाएँ हैं?

वर्ष 2006 के आसपास, भाषा और भाषाविज्ञान के प्रति मेरे निजी अनुराग ने मुझे स्वाभाविक रूप से नैसर्गिक भाषा संसाधन (नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग) की ओर आकर्षित किया। मानव-भाषा की जटिलताओं को समझना और उन्हें यंत्रों के माध्यम से अभिव्यक्त करना मेरे लिए एक अद्भुत बौद्धिक यात्रा बन गई।

भारतीय भाषाओं की विविधता, लिपियों की बहुलता और सांस्कृतिक गहराइयाँ इस साधना को और भी चुनौतीपूर्ण बनाती हैं। संसाधनों की कमी, उच्च गुणवत्ता वाले तथ्यों का अभाव और भाषाई मानकीकरण की समस्याएँ इस मार्ग में बाधाएँ उत्पन्न करती हैं। भारतीय भाषाओं में एनएलपी का विकास न केवल तकनीकी उन्नति है, बल्कि यह भाषाई समावेशन और डिजिटल लोकतंत्र की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यदि हम इन भाषाओं को तकनीक से जोड़ सकें, तो करोड़ों लोगों को उनकी मातृभाषा में सूचना, संवाद और सेवाओं की सहज पहुँच मिल सकती है।

5. आपने किन-किन परियोजनाओं में अंतर-भाषिक (क्रॉस-लिंगुअल) और बहु-भाषिक (मल्टीलिंगुअल) तकनीकों का उपयोग किया है?

भारतीय भाषाओं, विशेषतः बांग्ला में कार्य करने का अवसर मेरे लिए किसी वरदान से कम नहीं रहा। जब नैसर्गिक भाषा संसाधन में सांख्यिकीय विधियों का उदय हो रहा था और मशीन लर्निंग की लहरें तकनीकी क्षितिज पर तेज़ी से फैल रही थीं तब बड़े डेटासेट और प्रबल संगणनात्मक संसाधनों ने नई संभावनाओं के द्वार खोल दिए। इसी पृष्ठभूमि में मैंने अंतर-भाषिक और बहु-भाषिक तकनीकों का उपयोग करते हुए न केवल बांग्ला, बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं पर भी कार्य किया।

6. कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में उत्कृष्टता केंद्र (एक्सीलेंस इन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) की स्थापना और विकास की कहानी क्या है तथा इस केंद्र के माध्यम से आईआईटी खड़गपुर में एआई अनुसंधान को कैसे दिशा दी जा रही है?

सन् 2018 में आईआईटी खड़गपुर में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना एक स्वप्न के साकार होने जैसा था। मुझे इस केंद्र की प्रथम अध्यक्षा बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ — एक ऐसा अवसर, जहाँ मैंने न केवल एक संस्थान की नींव रखी, बल्कि एक विचारधारा को आकार दिया।

चार वर्षों तक इस भूमिका में रहते हुए, मैंने केंद्र की चार्टर-नीति का निर्माण किया, जो मूलभूत अनुसंधान और अंतर्विषयी सहयोग पर आधारित थी। यह नीति एक ऐसी दिशा थी, जो तकनीकी गहराइयों को मानवीय संदर्भों से जोड़ने का प्रयास करती थी। इस केंद्र ने संस्थान में एआई शिक्षण और अनुसंधान की अगुवाई की। हमने न केवल आधारभूत एआई पाठ्यक्रमों का संचालन किया, बल्कि विविध अंतर्विषयी क्षेत्रों में एआई के अनुप्रयोगों हेतु विशिष्ट और अभिनव पाठ्यक्रम भी विकसित किए। मेरे कार्यकाल में द्वैविध (डुअल) डिग्री अंतर्विषयी एम.टेक कार्यक्रम तथा सूक्ष्म-विशेषीकरण की शुरुआत हुई, जो छात्रों को गहराई और विविधता दोनों प्रदान करते हैं। वर्तमान में, यह केंद्र एक पूर्ण एआई विभाग के रूप में विकसित हुआ, जो आज बी.टेक और एम.टेक पाठ्यक्रमों की शिक्षा प्रदान कर रहा है।

7. क्या आप कुछ प्रमुख परियोजनाओं या उपलब्धियों के बारे में साझा कर सकती हैं?

मेरे शोध की यात्रा भाषाई न्याय और समावेशन की पुकार रही है, जहाँ तकनीक को उन अल्प-संसाधन भाषाओं तक पहुँचाने का प्रयास किया गया, जो अब तक हाशिए पर थीं। बहुभाषिक और पार-भाषिक दृष्टिकोणों के माध्यम से मैंने एनएलपी के विविध कार्यक्षेत्रों — जैसे टैगिंग, पार्सिंग, अनुवाद और प्रश्न निर्माण में उत्कृष्टता की खोज की, ताकि सीमित संसाधनों में भी सटीकता और प्रभाव सुनिश्चित हो सके।

टेक्स्ट माइनिंग के माध्यम से मैंने जैव-चिकित्सकीय और समाचार क्षेत्रों में ज्ञान-निष्कर्षण की नई विधियाँ विकसित कीं, जो तकनीक को संवेदनशीलता और सामाजिक समझ से जोड़ती हैं। ये उपलब्धियाँ केवल शोध-पत्र नहीं, बल्कि उस सतत प्रयास की गवाही हैं, जो तकनीक को अधिक मानवीय, समावेशी और उत्तरदायी बनाने की दिशा में किया गया है।

8. कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) जैसे जटिल विषय को छात्रों के लिए सुलभ और प्रेरणादायक बनाने के लिए आप क्या रणनीतियाँ अपनाती हैं?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे जटिल और सतत विकसित होते विषय को छात्रों के लिए सुलभ, प्रेरणादायक और मानवीय बनाना मेरे शिक्षण दर्शन का मूल है। मैंने तकनीकी गहराइयों को बौद्धिक जिज्ञासा और नैतिक संवेदना से जोड़ते हुए ऐसे पाठ्यक्रम विकसित किए हैं, जो केवल वर्तमान नहीं, भविष्य की चुनौतियों के लिए भी छात्रों को तैयार करते हैं।

मेरे लिए शिक्षण एक साझा यात्रा है — जहाँ प्रयोग, संवाद और नवाचार के माध्यम से छात्र न केवल तकनीकी दक्षता अर्जित करते हैं, बल्कि सोचने, प्रश्न करने और सृजन करने की स्वतंत्रता भी पाते हैं। मूल्यांकन में मैं केवल निष्पादन नहीं, बल्कि विचार की गहराई और तर्क की स्पष्टता को प्राथमिकता देती हूँ।

इस संतुलनपूर्ण दृष्टिकोण के माध्यम से मेरा प्रयास है कि छात्र कृत्रिम बुद्धिमत्ता को केवल एक उपकरण नहीं, बल्कि एक उत्तरदायित्व के रूप में समझें, जो तकनीक को मानवता के साथ जोड़ती है।

9. क्या आपने कोई विशेष पाठ्यक्रम या मॉड्यूल विकसित किया है जो छात्रों को व्यावहारिक अनुभव प्रदान करता है?

सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के TDIL कार्यक्रम के अंतर्गत मैंने तीन राष्ट्रीय परियोजनाओं में छात्रों को सक्रिय रूप से सहभागी बनाया — जहाँ उन्होंने भाषाई अनुवाद, पारभाषिक सूचना अभिगम और बहुभाषिक घटना निष्कर्षण जैसे क्षेत्रों में व्यावहारिक अनुभव अर्जित किया। इन परियोजनाओं में हमने बांग्ला सहित भारतीय भाषाओं के लिए मानक, डेटा और मॉड्यूल विकसित किए, और छात्रों ने भाषाओं के बीच तकनीकी सेतु निर्माण की बारीकियाँ सीखी।

10. सजग एआई (रिस्पॉन्सिबल एआई) या नैतिकता-सम्मत एआई (एथिकल एआई) के क्षेत्र में भी कार्य कर रही हैं, इस क्षेत्र के संबंध में विस्तार से बताएं।

रिस्पॉन्सिबल एआई मेरे लिए एक नैतिक संकल्प है, जहाँ तकनीकी नवाचार को सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ा जाता है। मैंने कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग को पर्यावरण, परिवहन और सूचना प्रणालियों जैसे विविध क्षेत्रों में इस प्रकार रूपांतरित किया है कि वे न केवल कुशल समाधान दें, बल्कि निष्पक्षता, पारदर्शिता और संवेदनशीलता को भी सुनिश्चित करें।

पर्जन्य पूर्वानुमान से लेकर ट्रक गतिशीलता तक और अनुशंसा प्रणालियों से लेकर रूटिंग एल्गोरिद्म तक, हर परियोजना में मेरा प्रयास यही रहा है कि तकनीक मानवता के साथ कदम मिलाकर चले। हर एल्गोरिद्म के पीछे एक विचार और हर निर्णय के पीछे एक उत्तरदायित्व हो, और इस दिशा में रिस्पॉन्सिबल एआई अच्छे परिणाम दे रही है।

11. भारत में एआई अनुसंधान को वैश्विक स्तर पर कैसे प्रतिस्पर्धी बनाया जा सकता है?

मेरे द्वारा कुछ वर्ष पूर्व विकसित 'मशीन लर्निंग का परिचय' (एनपीटीईएल) पाठ्यक्रम को अभूतपूर्व लोकप्रियता प्राप्त हुई, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि यदि ज्ञान को सुलभ, समावेशी और प्रेरणादायक रूप में प्रस्तुत किया जाए, तो भारत की युवा शक्ति वैश्विक मंच पर अपनी पहचान बना सकती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने समाज के विविध क्षेत्रों का कायाकल्प कर दिया है। जनरेटिव एआई ने कल्पना को नई उड़ान दी है, वहीं स्वचालन ने प्रक्रियाओं को अधिक कुशल और सुलभ बनाया है। किन्तु, प्रगति की इस नई दास्तान के साथ अनेक उत्तरदायित्व भी आते हैं। एआई के सम्यक् संचालन में तटस्थता, गोपनीयता, और नैतिक सतर्कता की आवश्यकता निरंतर गहराती जा रही है। समाज के व्यापक हित हेतु, हमें उत्तरदायी एवं विवेकपूर्ण विकास व क्रियान्वयन को प्राथमिकता देनी होगी।

12. युवाओं को तकनीकी क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए आप क्या संदेश देना चाहेंगी?

तकनीकी क्षेत्र एक ऐसा आकाश है, जहाँ कल्पना को उड़ान मिलती है और नवाचार को दिशा। यह केवल कोड और एल्गोरिद्म का संसार नहीं, बल्कि विचारों, मूल्यों और संभावनाओं का विस्तार है। यदि आप इस क्षेत्र में कदम रखते हैं, तो जान लें कि आपके पास न केवल समस्याओं को हल करने की शक्ति है, बल्कि समाज को बेहतर बनाने का अवसर भी है।

आप जिज्ञासु बनें, प्रश्न पूछें, और सीमाओं को चुनौती दें। तकनीक की दुनिया में स्थायित्व उन्हीं को मिलता है जो मूलभूत सिद्धांतों को समझते हैं और उन्हें समय के साथ पुनः परिभाषित करने का साहस रखते हैं।

साहस रखें, सीखते रहें और सृजन करते रहें — यही आपकी सबसे बड़ी शक्ति है।

मैनी लाईव्ज़ मैनी मास्टर्स

डॉ. ब्रायन व्रीज

डॉ. हेमलता
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

डॉ. ब्रायन वीज जो एक प्रसिद्ध पारंपरिक रूप से प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिक थे, जिनके विभिन्न अनुसंधान कार्य प्रकाशित हो चुके थे। उनकी 15 जुलाई, 1988 को प्रथम बार प्रकाशित यह पुस्तक एक अत्यधिक खरीदी जाने वाली पुस्तक है, जिसका हिंदी अनुवाद भी किया गया है। इस पुस्तक को अंतिम रूप देने में लेखक को 4 वर्षों का समय लगा।

इस पुस्तक का मुख्य विषय मनोवैज्ञानिक एवं उसके युवा मरीज की पूर्वजन्म की वास्तविक कहानी है जिसने उन दोनों के जीवन को परिवर्तित कर दिया। कैथरीन वह स्त्री है जो अपने दुस्वप्नों से अत्यंत विक्षिप्तावस्था तक पहुँच रही थी। वह एक मनोचिकित्सक अर्थात् इस पुस्तक के लेखक से संपर्क करती है और अपना इलाज करवाती है ताकि उन दुस्वप्नों से उसे मुक्ति मिल सके। लेखक ने 18 महीनों तक पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों का उपयोग करके उसके दुस्वप्नों को दूर करने का अथक प्रयास किया। जब पारंपरिक चिकित्सा पद्धति कारगर नहीं हुई तो सम्मोहन (हिप्नोसिस) विधि को अपनाया। सम्मोहन की गहन विश्रांतिपूर्ण अवस्थाओं में कैथरीन ने अपने पूर्वजन्मों की स्मृतियों को याद किया जो उसके दुस्वप्नों का मूल कारण थी। उसके बाद पुनर्जन्म की परतें एक के बाद एक खुलनी शुरू हो गई और वहीं से उन दुस्वप्नों की डोर जुड़ी हुई थी।

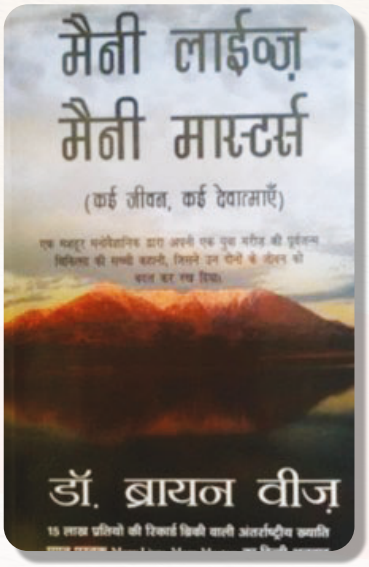

इस सम्मोहन के दौरान कैथरीन अद्वितीय 'दिव्यात्मा स्वरूपों' के संदेशों का वाहक भी बनती है एवं सम्मोहन के दौरान एक जीवन से दूसरे जीवन में प्रवेश करने के मध्य जीवन एवं मृत्यु के विभिन्न रहस्यों को भी बताती है। कुछ महीनों के इलाज एवं दुस्वप्नों के मूल कारण का पता लगने पर उसकी सभी समस्याएँ समाप्त हो जाती है और वह अपने वर्तमान जीवन में अधिक शांत रूप में लौटने में सफल होती है।

लेखक इन सभी रहस्यों को जानकर अचंभित था क्योंकि इसका कोई वैज्ञानिक स्पष्टीकरण नहीं था। कैथरीन के अवचेतन मस्तिष्क में पूर्वजन्मों की कुछ स्मृतियाँ संग्रहित थी जो उसके दुस्वप्नों का कारण बन रही थी।

हमें मानव जीवन कई योनियों को पार करने के बाद मिलता है और जब तक हम धरती पर अपना आना सार्थक नहीं कर पाते तब तक यह आत्मा एक शरीर से दूसरे शरीर में प्रवेश करती रहती है। इसी आत्मतत्व को मोक्ष प्राप्ति और आने-जाने के बंधन से मुक्त करने हेतु भारतीय एवम् पाश्चात्य दार्शनिकों ने अपने-अपने विचार रखे हैं।

डॉ. ब्रायन वीज ने अपने अनुभव को बाँटकर हमें पुनर्जन्म के अनसुलझे पहलू के बारे में सोचने को विवश कर दिया है। शायद यही कारण है कि जब हम किसी अनजान व्यक्ति से मिलते हैं, तो वह हमें बहुत ही जाना पहचाना लगता है। इस वैज्ञानिक युग में यह पुस्तक जीवन के वास्तविक सत्य का प्रतिनिधित्व करती है जो भारतीय शास्त्रों में पूर्व में बताया जा चुका है। हमारे कर्म ही है जो मृत्यु के पश्चात् भी हमारे साथ रहते हैं जबकि यह शरीर तो नश्वर है। जीवन का यह सच वर्तमान के हमारे सभी दुखों, परेशानियों और समस्याओं का समाधान है जिसे हम मानना नहीं चाहते हैं। यह पुस्तक भी इसी भावना के साथ लिखी गई है।

संक्षेप में, "मैनी लाईव्ज़, मैनी मास्टर्स" पुस्तक पूर्वजन्मों के रहस्यों से संबंधित एक वास्तविक कहानी पर आधारित है। आप चाहे पूर्वजन्म को माने या ना माने पर यह पुस्तक आपको इस विषय पर गंभीरता से सोचने पर विवश अवश्य कर ही देगी। जैसे-जैसे आप पुस्तक को पढ़ते जाएंगे, पूरी कहानी का चित्र आपके समक्ष उपस्थित होता जाएगा जो आपको जन्म और मृत्यु के बाद की स्थिति पर चिंतन करने को विवश कर देगा।

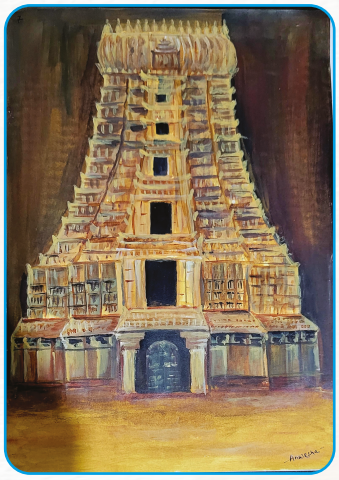

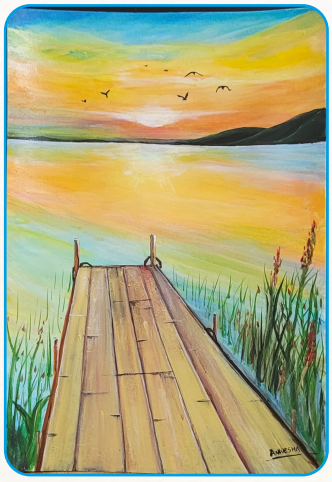

अन्वेषा दास
सुपुत्री : श्री रजत कुमार दास
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय, जोरहाट

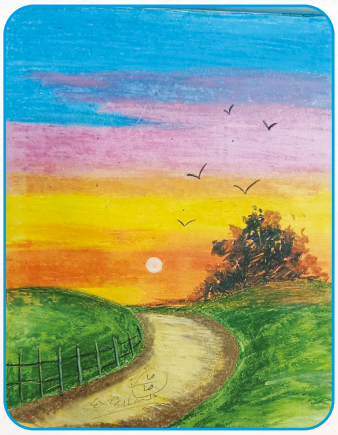

कुमारी समृद्धि दाश
सुपुत्री : श्री श्रीकांत दाश
ग्राहक सेवा सहायक
अंचल कार्यालय, संबलपुर

स्वयं सार्थक प्रधान
सुपुत्र : श्री सुशील कुमार प्रधान
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय, संबलपुर

विवेकानंद सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक
स्टाफ प्रशिक्षण केंद्र, जयपुर

नंबर फीवर 349 - एक सफल विपणन रणनीति जो जानलेवा साबित हुई

दशकों पहले एक ऐसी घटना घटी जिसने कंपनियों को अपने उत्पादों की मार्केटिंग रणनीतियों पर दोबारा सोचने पर मजबूर कर दिया। एक ऐसा मार्केटिंग स्टंट था, जिसने फिलीपीन्स में सोडा पीने वालों को एक मिलियन पेसो जिताने का वादा किया था लेकिन एक बॉटलिंग प्लांट में हुई एक छोटी सी गड़बड़ी के कारण इस प्रतियोगिता में लगभग 6 लाख से भी ज्यादा लोगों को जीत मिली। इससे कंपनी को 32 बिलियन डॉलर का नुकसान हुआ, पाँच लोगों की मौत हुई, सैकड़ों दीवानी मुकदमे हुए और लगभग 22 हजार से अधिक आपराधिक शिकायतें कंपनी के खिलाफ दर्ज हुईं। यह सब केवल बोतलों की ढक्कनों में प्रिंटिंग की गलती के कारण हुआ। यह घटना किसी भी कंपनी के लिए किसी बुरे सपने से कम नहीं थी।

25 मई 1992 की शाम के 6 बजे थे, जब फिलीपींस की लगभग 70% आबादी 'चैनल 2' पर शाम की खबरें देखने के लिए अपने टेलीविज़न के सामने एकत्रित थी। यह एक विशेष रात थी क्योंकि मनीला में चैनल 2 के समाचार कार्यक्रम में एक बड़ी प्रतियोगिता में विजेता नंबर की घोषणा होने वाली थी।

फिलीपींस में एक कंपनी पिछले चार महीनों से एक प्रतियोगिता चला रही थी, जिसके विज्ञापनों में लोगों से वादा किया गया था कि "आप करोड़पति बन सकते हैं" और एक मिलियन पेसो जो की आज (2025) के भारतीय रुपये में लगभग पचासी लाख रुपये (रु॰ 85,00,000) होते हैं, जीत सकते हैं। यह उस समय देश में उपलब्ध सबसे बड़ा पुरस्कार था, जो उस समय देश के औसत मासिक वेतन का 611 गुना था। यह वो दौर था जब फिलीपींस की अर्थव्यवस्था संघर्षरत थी और देश में व्यापक गरीबी थी। उस समय 1 मिलियन पेसो बहुत बड़ी रकम थी और इसकी जीत को जीवन बदलने वाला माना जाता था। यह राशि इतनी बड़ी थी कि लोग अपनी नौकरियां छोड़ने तक को तैयार थे।

मार्केटिंग से अपना और दूसरों के भाग्य को बदलना - मार्केटिंग रणनीति और नंबर फीवर

मार्केटिंग हमेशा से कंपनियों के लिए एक हथियार रहा है, जिससे वो लोगों के दिलों और दिमाग पर राज करने का प्रयत्न करती रहीं हैं। यह उन्हें अपनी सेवाओं और उत्पादों को बढ़ावा देने, अपने ब्रांड को स्थापित करने और ग्राहकों को आकर्षित करने में मदद करता है। ऐसी ही एक मार्केटिंग रणनीति थी 'नंबर फीवर', जिसमें पेप्सी अपने विशेष नंबर अंकित ढक्कन वाली बोतलों के माध्यम से विजेता का निर्णय करती थी।

नंबर फीवर के पीछे चिली के पेड्रो वर्गारा नामक एक कार्यकारी का दिमाग था, जो न्यूयॉर्क में प्रचार विभाग में कार्यरत थे। 'नंबर फीवर' के अमेरिका में सफल होने के बाद, पेप्सी-कोला इंटरनेशनल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी क्रिस्टोफर सिंक्लेयर ने विदेशों में इसे कोका-कोला से मुक़ाबले के लिए अपने रणनीति का हिस्सा बनाया। वे 38 वर्ष की आयु में पेप्सी इंटरनेशनल के सीईओ बनकर कंपनी के इतिहास में सबसे कम उम्र के कार्यकारी बनने का गौरव हासिल किया था। छह महीनों में 77 देशों का दौरा करने के बाद वे दुनिया के दुकानों के गलियारों को "कोका-कोला से भरा हुआ" पाकर निराश हो गए और मार्केटिंग की नई रणनीति पर काम शुरू कर दिया। इस रणनीति में लकी नंबर विजेता के लिए 1 मिलियन पेसो का पुरस्कार की योजना बनाई गई।

पेप्सी ने 'नंबर फीवर' को अर्जेंटीना, चिली, ग्वाटेमाला, मैक्सिको और फिलीपींस में लाने के लिए मैक्सिकन कंपनी डीजी कंसल्टोरेस को काम पर रखा, जहाँ इसने वास्तव में धूम मचाई। मासिक बिक्री तेज़ी से $10 मिलियन से बढ़कर $14 मिलियन हो गई और इसका बाज़ार हिस्सा 19.4% से बढ़कर 24.9% हो गया। बॉटलिंग प्लांट दिन में 20-20 घंटे तक काम करने लगे जिससे उनका सामान्य उत्पादन दोगुना हो गया।

इस आक्रामक विज्ञापन अभियान ने मीडिया पर अपना दबदबा बनाया। इस प्रतियोगिता में 29 रेडियो स्टेशन और चार अख़बार विजेता नंबर प्रसारित कर रहे थे। यह प्रतियोगिता जो शुरू में 8 मई 1992 को समाप्त होने वाली थी, उसे पाँच सप्ताह के लिए और बढ़ा दिया गया और इसी ने इतिहास के सबसे भयावह मार्केटिंग त्रासदी की नींव रख दिया।

'नंबर फीवर' अब नंबर हिस्टीरिया के कगार पर पहुँच चुका था। इसने फिलीपींस के 65 मिलियन आबादी को जकड़ लिया था। पेप्सी का "नंबर फीवर" अब एक राष्ट्रीय घटना बन चुका था। इस प्रतियोगिता ने एक उन्माद पैदा कर दिया था। बच्चे हर जगह बोतल के ढक्कन ढूँढ रहे थे, परिवार पेप्सी के ढक्कनों को बैग में छिपा रहे थे, लोग कूड़े के डिब्बों में खोजबीन कर रहे थे और कुछ लोग तो बोतल के ढक्कन के लिए सड़कों पर लड़ भी रहे थे।

एक घटना में तो पुलिस ने एक नौकरानी को जेल में भी डाल दिया, जिस पर अपने नियोक्ता का विजेता मुकुट चुराने का आरोप था। एक अन्य विजेता मुकुट को लेकर हुए विवाद के बाद तो दो पेप्सी सेल्सपर्सन की हत्या भी कर दी गई थी।

इस बीच, दो मुख्य अमेरिकी कंपनियों ने फिलीपींस का इस्तेमाल एक अलग तरह के छद्म युद्ध के लिए भी किया। पेप्सिको इंक. और कोका-कोला कंपनी ने वहां जासूसी और ऐसी रणनीतियाँ अपनाई जो अमेरिका में कभी अनुमति नहीं दी जाती। एक बार तो पेप्सी के अधिकारियों को कोक से अधिक बिक्री दिखाने के लिए खातों में हेराफेरी करते हुए पकड़ा गया, जिसके कारण उन्हें 90 मिलियन डॉलर का नुकसान उठाना पड़ा।

कोका कोला ने अपने ब्रांड पहचान, मजबूत वितरण नेटवर्क और लोकप्रियता के दम पर बाजार में अपना वर्चस्व बनाए रखा। 1992 तक इसने कोला बाज़ार में अपनी हिस्सेदारी 83% तक बढ़ा ली थी, जो इतनी अधिक थी कि इसने विज्ञापन देने की ज़हमत नहीं उठाई। परंतु 'नंबर फीवर' ने कोक को एक झटके में बुरी तरह से घायल कर दिया। पेप्सी-कोला प्रोडक्ट्स फिलीपींस इंक के अध्यक्ष रोडोल्फो सालाजार ने दावा किया कि देश की आधी आबादी इस प्रतियोगिता में भाग ले रही है, जिससे यह "दुनिया का सबसे सफल मार्केटिंग प्रमोशन" बन गया।

नंबर फीवर – 349 और मार्केटिंग त्रासदी

25 मई 1992 की शाम को आखिरकार वह बहुप्रतीक्षित पल आ ही गया जब पेप्सीकोला बोतल के ढक्कन का विजेता नंबर घोषित किया गया, जिसका नंबर 349 था। हर मोहल्ले में खुशी की चीखें सुनी जा सकती थीं और फिर सारे के सारे मोहल्ले जगमगा उठे। एक बस चालक के पास तीन विजेता ढक्कन थे, जिनमें प्रत्येक पर 1 मिलियन पेसो अंकित था। 12 बच्चों की एक माँ जिसके बच्चे प्रतिदिन 10 बोतल पेप्सी पीते थे, ने 35 मिलियन पेसो जीतने का दावा किया।

विजेता अपने अपने पुरस्कार लेने के लिए मनीला के उत्तर-पूर्व में क्यूज़ोन शहर में पेप्सी की बॉटलिंग फैक्ट्री के गेट की ओर दौड़े। उन लोगों को गेट पर ही रोक दिया गया और बताया गया कि कंपनी से गलती हुई है और कोई पुरस्कार राशि नहीं दी जाएगी। इससे लोगों के बीच बड़े पैमाने पर आक्रोश छा गया और दंगे भड़क उठे। बहिष्कार और विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए। फिलीपींस में एक गहरा संकट छा गया। पेप्सी ने दावा किया कि केवल दो विजेता

बोतल कैप पर विशेष सुरक्षा कोड था। विजेताओं ने चिल्लाते हुए कहा कि किसी भी प्रचार सामग्री में विशेष सुरक्षा कोड के बारे में कुछ नहीं कहा गया था। जैसे-जैसे भीड़ बढ़ती गई, एक सचिव ने मार्केटिंग डायरेक्टर रोज़मेरी वेरा को फ़ोन किया। फिलीपीन डेली इन्क्वायरर के एक लेख के अनुसार, सचिव ने कहा, "ऐसा लगता है कि मेरे जानने वाले लोगों के पास कई 349 क्राउन हैं।" रात 10 बजे, कंपनी के किसी व्यक्ति ने फिलीपींस के व्यापार और उद्योग विभाग को फ़ोन किया और कहा कि कोई गलती हो गई है। जब 25 मई को आपदा सामने आई तो पेप्सी ने शुरू में विजेता संख्या बदलने की कोशिश की। अगली सुबह अखबारों ने बताया कि असली विजेता 134 था जिससे भ्रम और भी बढ़ गया। कंपनी ने क्यूज़ोन सिटी में स्थित फैक्ट्री के गेट बंद कर दिए। सुबह होते-होते पुलिस और सैनिक 349 क्राउन धारकों से जूझ रहे थे जो इमारत पर पत्थर फेंक रहे थे।

अगली रात तक विरोध प्रदर्शन जारी रहा। सुबह 3 बजे, पेप्सी ने फैसला किया कि वह अगले दो हफ़्तों में आगे आने वाले 349 नंबर क्राउन धारकों को 500 पेसो की "सद्भावना राशि" देगी। अधिकारियों ने गणना की कि यदि 349 नंबर के साथ 600,000 क्राउन में से आधे को भी भुनाया जाता है तो नुकसान 6 मिलियन डॉलर तक सीमित हो जाएगा।

यह शायद इतिहास की सबसे घातक मार्केटिंग आपदा थी और यह व्यापार जगत की सबसे बड़ी चेतावनी कहानियों में से एक है। यूनिवर्सिटी ऑफ इडाहो के प्रोफेसर और जोखिम प्रबंधन पाठ्यपुस्तक के सह-लेखक 'ली ओस्ट्रोम' कहते हैं, "मुझे नहीं लगता कि शुरू से ही लोग इसे देखकर कहेंगे कि लोग वास्तव में मर सकते हैं, लेकिन फिर भी, परमाणु ऊर्जा उद्योग या विमानन की तरह, लोगों को चीजों पर ध्यान देना चाहिए और उन भयावह घटनाओं से सीखना चाहिए।"

अप्रिय घटनाएं बढ़ती रही। कुछ लोगों ने सुरक्षा गार्डों को देखा जो भीड़ पर कांच की सोडा की बोतलें फेंक रहे थे और एक पुलिसकर्मी ने दंगारोधी ढाल लेकर उन पर हमला भी किया। लोगों ने पास के डंकिन डोनट्स की दुकान में शरण ली, जो उत्तेजित विजेताओं से भरी हुई थी। बाहर पेप्सी के ट्रक स्वचालित हथियार लिए हुए गार्डों से घिरे थे। एक मैनेजर ने फैक्ट्री से भागने की कोशिश की, लेकिन प्रदर्शनकारियों ने उस पर पत्थर फेंके। कुछ घंटों बाद बम विस्फोट की भी धमकी दी गई।

349 क्राउन के कई धारकों ने अपने क्राउन के लिए पेप्सी के 500 पेसो के प्रस्ताव को स्वीकार भी कर लिया; पहले दो दिनों में कंपनी ने 12.5 मिलियन पेसो से अधिक का भुगतान किया।

कंपनी ने बताया कि विस्तार से मुकुटों पर एक अलग सात-अंकीय सुरक्षा कोड मुद्रित किया गया था और इनमें से किसी को भी सम्मानित नहीं किया जाएगा। इस स्पष्टीकरण से प्रदर्शनकारियों को संतुष्टि नहीं मिली। लोगों ने पेप्सी से लड़ने के लिए नए नए यूनियन और गठबंधन बना लिए। कुछ लोग तो कालाबाजारी भी करने लगे कि वो आपको पैसे वापस दिलाएंगे। इसी तरह एक 'गठबंधन 349' भी बना जिसने पेप्सी प्लांट के बाहर रैलियाँ आयोजित कीं। 'यूनाइटेड

349' और 'सॉलिड 349' जैसे नाम वाले समूह भी बने जो लोगों से शुल्क ले रहे थे, जिनमें कुछ तो सदस्यता के लिए 1,000 पेसो तक मांग रहे थे। एक महिला 'मैरीली सो' और उनके पति ने एक उपदेशक, "भाई" बांबी सैंटोस के साथ साइन अप किया, जिन्होंने कहा कि भगवान ने उन्हें पेप्सी से लड़ने के लिए बुलाया है। वे उसे भविष्य के किसी भी समझौते का 30% तक देने के लिए सहमत हो गए और उसकी रैलियों और विरोध प्रदर्शनों में शामिल हो गए। कुछ प्रांतों में तो किसानों द्वारा मनीला की यात्रा का खर्च उठाने के लिए अपने मवेशियों को बेचने तक की सूचना मिली थी।

अराजकता आगे भी जारी रही। क्यूज़ोन सिटी में प्रदर्शनकारियों ने टायर जलाए। सट्टेबाजों ने बाद में बड़ी रकम मिलने की उम्मीद में नंबर 349 के लिए ढेर सारे पैसों की भी पेशकश की। यहां तक कि पुलिस भी उन्माद से अछूती नहीं रही। एक राष्ट्रीय जांच ब्यूरो (एनबीआई) का एक अधिकारी अपने दस लाख पेसो घर ले जाने के लिए एक खाली अटैची केस के साथ क्यूज़ोन सिटी प्लांट पहुंचा।

जैसे-जैसे दिन, हफ़्तों और फिर महीनों में बदल गए, करीब 10,000 दावेदारों ने पैसे की मांग करते हुए मुकदमे दायर किए। मोलोटोव कॉकटेल (एक तरह का हैंड ग्रेनेड) और हाथ बम पेप्सी की फैक्ट्रियों तथा दर्जनों डिलीवरी ट्रकों पर फेंके गए। इससे जो आग लगी उसको पेप्सी के ड्राइवरों ने 7-अप से बुझाया। लोगों में बड़ी बेरुखी पैदा हो गई और इसी क्रम में पेप्सी-कोला हॉटशॉट्स बास्केटबॉल टीम ने अपना नाम बदलकर 7-अप अनकोलास (7-Up Uncolas) रख लिया। पेप्सी के अधिकारियों ने अब अंगरक्षकों के साथ यात्रा करना शुरू कर दिया और कंपनी ने अमेरिकी कर्मचारियों को देश से बाहर निकाल दिया, सिवाय एक के जो बेरूत में काम करता था। मार्केटिंग डायरेक्टर वेरा ने बाद में एक रिपोर्टर को बताया कि "हम नाश्ते में मौत की धमकियाँ खा रहे थे।" मनीला में एक दंगे के दौरान, पैसिएंसिया सलेम नामक 64 वर्षीय प्रदर्शनकारी, जिनके पति की एक मार्च के दौरान दिल का दौरा पड़ने से मृत्यु हो गई थी, ने एक पत्रकार से कहा, "भले ही मैं यहाँ मर जाऊँ, मेरा भूत पेप्सी से लड़ने आएगा।"

इस प्रतियोगिता ने इतना गुस्सा क्यों भड़काया, बेशक यह पैसे की वजह से था, लेकिन सिर्फ़ यही नहीं था। इस घटना ने फिलीपींस में उपनिवेशवाद विरोधी भावना को बढ़ावा दिया, जो उस समय अमेरिकी सैन्य उपस्थिति को लेकर भड़की हुई थी। तनावपूर्ण, असफल वार्ता के बाद अमेरिका अपने छह ठिकानों में से आखिरी ठिकाने से भी हट रहा था। इन ठिकानों का बंद होना राष्ट्रवादियों के लिए एक जीत थी, लेकिन इसकी कीमत सालाना सहायता में करोड़ों डॉलर और हज़ारों नौकरियाँ थीं।

लोगों की कल्पना में 'नंबर फीवर' देश के अव्यवस्थित राष्ट्रीय चुनावों से भी जुड़ गई, जो कुछ सप्ताह पहले हुए थे, लेकिन मतगणना में देरी तथा प्रक्रियात्मक और कानूनी चुनौतियों के कारण अभी भी अनसुलझे थे। एक स्तंभकार ने लिखा, "किसी को आश्चर्य होना चाहिए कि मतदान केंद्र से पेप्सी विरोध प्रदर्शन में कितने मतदाता खींचे चले आए

होंगे।" अंततः, राष्ट्रपति पद के चुनाव में रामोस ने सैंटियागो को मामूली अंतर से हराया।

जनवरी 1993 में, पेप्सी को सरकार द्वारा स्वीकृत प्रचार अभियान से अलग हटकर काम करने के लिए व्यापार और उद्योग विभाग को 150,000 पेसो का जुर्माना देना पड़ा। मार्केटिंग डायरेक्टर रोज़मेरी वेरा ने लॉस एंजिल्स टाइम्स को बताया, "हमने वह सब कुछ किया है जो हमें लगता है कि इस मुद्दे को सौहार्दपूर्ण ढंग से निपटाने के लिए उचित है। इस समय हम अतिरिक्त पैसे खर्च करने का इरादा नहीं रखते हैं।"

यह घटना फरवरी की एक सुबह की है जब एक पेप्सी डिलीवरी ट्रक आया और किसी ने उस पर एक घर का बना बम फेंका, जो ट्रक से टकराकर फट गया। विस्फोट में उस व्यक्ति की पत्नी और पास में खड़ी एक 5 वर्षीय बच्ची की मौत हो गई, जबकि पाँच अन्य घायल हो गए।

अगले महीने, दवाओ शहर में पेप्सी प्लांट पर फेंके गए ग्रेनेड ने तीन कर्मचारियों की जान ले ली। फिलीपीन सीनेट की रिपोर्ट ने कंपनी को "घोर लापरवाही" और "भ्रामक विज्ञापन" का दोषी बताया।

फरवरी 1994 में, कंपनी ने 349 कोर्ट केस खो दिया। मनीला के उत्तर में बुलाकान में एक 21 वर्षीय मेडिकल छात्र जोवेल रोके ने निचली अदालत का फैसला जीता, जिसमें पेप्सी को उसे 1 मिलियन से अधिक पेसो का भुगतान करने का आदेश दिया गया। कंपनी ने अपील की, लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि उसे सफलता मिली या नहीं।

फैक्ट्री के बाहर इकट्ठा हुए लोगों में विसेंट डेल फिएरो जूनियर भी शामिल थे, जो एक विज्ञापन सलाहकार और एक करिश्माई कैथोलिक संप्रदाय के प्रचारक थे। डेल फिएरो ने एक अखबार को लिखे खुले पत्र में इस प्रचार को "एक सामाजिक बीमारी बताया, जो हमारे बच्चों में जुए की प्रवृत्ति को बढ़ावा देती है।" डेल फिएरो कंपनी के खिलाफ लड़ाई लड़ते रहे। हालांकि न्यूयॉर्क की एक अदालत ने डेल फिएरो के मुकदमे को यह कहते हुए खारिज कर दिया कि इसकी सुनवाई फिलीपींस में होनी चाहिए।

विरोध प्रदर्शन आखिरकार समाप्त हो गए, लेकिन मुकदमे सालों तक चलते रहे। 2006 में, आखिरकार एक फिलिपिनो अदालत ने फैसला सुनाया कि पेप्सी ने लापरवाही नहीं की थी और वह नुकसान के लिए उत्तरदायी नहीं है। इसी के साथ कंपनी का दुःस्वप्न समाप्त हो गया। 1997 में पेप्सी छोड़ने वाले मार्केटिंग डायरेक्टर रोज़मेरी वेरा कहते हैं, "यह दूर-दराज के इलाके में हुई कोई छोटी-मोटी घटना नहीं थी, जिसकी हमें परवाह नहीं थी। "हमें इस बात की बहुत परवाह थी कि क्या हुआ। हम इस मामले को सभी की संतुष्टि के लिए सौहार्दपूर्ण ढंग से हल करने के बारे में गहराई से चिंतित थे। हमें मनीला में हुई हिंसा पर निश्चित रूप से खेद है।"

अंत में यह कहा जा सकता है कि यह घटना कंपनियों के लिए एक उदाहरण और सीख है तथा साथ में विपणन रणनीतियों को डिजाइन करते समय लक्षित दर्शकों और सांस्कृतिक संवेदनशीलता को समझने के महत्व को उजागर करती है।

"भारतीय संस्कृति एक विकसित शत दल कमल की तरह है जिसकी प्रत्येक पंखुड़ी हमारी प्रादेशिक भाषाएँ हैं। किसी भी एक पंखुड़ी के नष्ट होने से कमल की शोभा नष्ट हो जाएगी। मैं चाहता हूँ कि प्रादेशिक भाषाएं रानी बन कर प्रांतों में विराजमान रहें एवं इनके बीच हिंदी मध्यमणि बन कर विराजती रहे।"

– रवीन्द्रनाथ ठाकुर

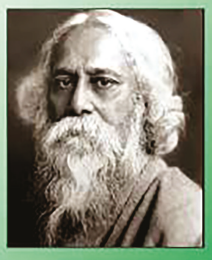

लाहौल (हि.प्र.), की एक अविस्मरणीय यात्रा

एकाग्र प्रकाश
मुख्य प्रबंधक
अंचल कार्यालय, करनाल

आमतौर पर लोग भीड़, ट्रैफिक और पर्यटन की हलचल के बीच हिमाचल के मनाली, सोलांग और कुल्लू जाकर छुट्टियाँ बिताते हैं, लेकिन इस बार हमारे मन में एक अलग ही सोच थी। हमने सोचा क्यों न इस बार उस हिमालय को देखा जाए, जो आज भी भीड़ से दूर अपने शुद्ध स्वरूप में विद्यमान है? हमारी योजना थी मनाली की सीमाओं को पार करके उस लाहौल घाटी तक पहुँचना, जहाँ समय थम जाता है, वादियों की नीरवता आत्मा से संवाद करती है, और जहाँ की हवा में अब भी सादगी और शुद्धता सांस लेती है। यह केवल एक यात्रा नहीं थी यह एक अनुभव, एक खोज और परिवार के साथ बिताए कुछ दुर्लभ शांत क्षणों की उम्मीद थी।

मैं, मेरी पत्नी और हमारे दस वर्षीय बेटे ने मिलकर इस यात्रा को जीवन का एक अविस्मरणीय अध्याय बनाने की ठानी। हमने अपनी कार में सामान रखा, दिल में रोमांच भरा और घर के दरवाज़े बंद कर उस खुले आकाश की ओर चल पड़े, जहाँ प्राकृतिक सौंदर्य, संस्कृति, अध्यात्म और रोमांच का अद्भुत संगम हमारा इंतज़ार कर रहा था। सुबह के लगभग 4 बजे, हम अपनी कार लेकर करनाल से निकले। आसमान में हल्की रोशनी फूटने लगी थी और मौसम सुहावना था। हरियाणा की समतल ज़मीन को पीछे छोड़ते हुए जब हम अम्बाला और फिर चंडीगढ़ पार करने लगे, तो सड़कों पर हरियाली और ठंडी हवा ने स्वागत करना शुरू कर दिया। जैसे-जैसे हम कुल्लू घाटी की ओर बढ़े, व्यास नदी ने हमारा साथ पकड़ लिया। उसकी कलकल ध्वनि और साथ-साथ चलती सर्पीली सड़कें जैसे किसी फिल्म का हिस्सा थीं। रास्ते में कुल्लू और उसके पार छोटे-छोटे गाँव, सेबों के बागान और ढाबों पर गर्मा-गर्म पकौड़े और चाय ने यात्रा को मनोरम बना दिया। शाम तक हम मनाली पहुँचे। यहाँ हमने एक शांत होटल में ठहराव किया। होटल की खिड़की से बर्फ से ढकी चोटियाँ साफ़ दिखाई दे रही थीं। बेटे के चेहरे पर खुशी थी, वह बार-बार बाहर झांककर बर्फ को निहारता रहा।

सुबह की पहली किरणें आकाश पर फैलनी शुरू ही हुई थीं जब हम अपने होटल से निकल पड़े। घड़ी में छह बजे थे, लेकिन मन में उमंग और उत्साह का स्तर जैसे समय से कहीं आगे दौड़ रहा था। रोहतांग दर्रे की ओर बढ़ने का निर्णय जितना रोमांचकारी था, उतना ही व्यावहारिक भी क्योंकि दिन चढ़ते ही यह मार्ग भारी भीड़ और ट्रैफिक से भर जाता है और मौसम भी तेजी से करवट लेने लगता है। जैसे-जैसे हमारी कार ऊँचाई की ओर बढ़ती गई, हवा में ठंडक घुलती गई। घाटियों में खिलती धूप अब बादलों की चादर में लिपटी हुई लग रही थी। सर्पीली सड़कें, जिनके दोनों ओर

बर्फ की परतें जमी थीं, किसी सफेद परी कथा के पन्ने जैसे प्रतीत हो रही थीं। हवा में हल्की बर्फ के कण तैर रहे थे और दूर-दूर तक सिर्फ बर्फ, चट्टानें और नीरवता पसरी हुई थी। हमारा बेटा, जो अब तक कार की पिछली सीट पर झपकी ले रहा था, अचानक बाहर का दृश्य देखकर चौंक उठा, उसकी आँखों में चमक थी - जैसे उसने किसी जादुई दुनिया में प्रवेश कर लिया हो। "पापा! ये सब असली है ना?" करीब 13,000 फीट की ऊँचाई पर स्थित रोहतांग पास पर पहुँचकर हमने कार रोकी। यहाँ हवा में साँस लेना थोड़ा भारी था, लेकिन नज़ारा इतना भव्य और निर्मल था कि हर कठिनाई पलभर में गायब हो गई। दूर-दूर तक बर्फ से ढकी चोटियाँ, धुंध और बर्फ की रेखाओं से सजी पगडंडियाँ और तेज़ ठंडी हवा यह सब मिलकर एक ऐसा अनुभव रच रहे थे, जिसे शब्दों में बांध पाना मुश्किल था।

लेकिन हमारा सफर यहीं खत्म नहीं था - वास्तव में, यह तो केवल एक प्रवेश द्वार था। अधिकतर पर्यटक यहीं तक आकर लौट जाते हैं, लेकिन हम अब उस रास्ते पर आगे बढ़ रहे थे, जो कम देखा गया, कम जाना गया, लेकिन अनोखी सुंदरता से भरपूर था।

जैसे ही हमने रोहतांग दर्रे को पार किया और लाहौल घाटी की ओर उतरना शुरू किया, दृश्य पूरी तरह बदल गया। अब पेड़ों से सजे रास्तों की जगह आ गई थी नंगे पहाड़, गहराई लिए खड्डे, और कलकल करती 'भागा' नदी, जो हमारे साथ-साथ बह रही थी। सड़कें अब चट्टानों को चीरती हुई आगे बढ़ रही थीं और हर मोड़ पर एक नया दृश्य हमारा इंतज़ार करता था। कुछ ही देर में हम उस पहले गाँव में पहुँचे, जिसे सिस्सू कहा जाता है। सिस्सू का नाम आते ही आँखों के सामने एक ऐसा दृश्य उभर आता है जहाँ प्रकृति अपने सबसे शांत, निर्मल और सजीव रूप में उपस्थित होती है। भागा नदी के किनारे बसा यह छोटा-सा गाँव, ऊँचे पहाड़ों की छाँव में छिपा एक नगीना है, जो लाहौल की अनछुई सुंदरता का प्रतीक है।

रोहतांग दर्रे की थकान और रोमांच के बाद जब हमने सिस्सू में प्रवेश किया, तो मन को जैसे एक अद्भुत सुकून मिला। सड़क के किनारे लगे छोटे-छोटे सेब और मटर के खेत, रंग-बिरंगे घरों की कतारें और नदी की बहती धारा का मधुर संगीत, इन सब ने हमें अपनी बाहों में भर लिया।

हमने गाँव के भीतर एक स्थानीय गेस्ट हाउस में ठहरने का निर्णय लिया, जहाँ लकड़ी की छत, मिट्टी की खुशबू और पहाड़ी मेहमाननवाज़ी ने हमें घर जैसा अनुभव दिया। कमरे की खिड़की से बाहर झांकने पर सिस्सू जलप्रपात का मनोरम दृश्य दिखाई देता था। यह जलप्रपात पास की ऊँची चट्टानों से गिरता हुआ नीचे घाटी में एक सुंदर सफेद रेखा की तरह बहता है। जल की गर्जना और हवा में उसकी ठंडी बूँदें वातावरण को मधुर बना रही थीं।

दोपहर में हमने एक छोटी सी दुकान में जौ की रोटी, हाथ से तैयार किया गया तिब्बती सूप और ताजा मक्खन वाली नमकीन चाय (बटर टी) का लुत्फ़ उठाया। हर निवाला जैसे उस मिट्टी की गर्मजोशी से भरा हुआ था। शाम होते-होते आसमान नीला से जामुनी हुआ और जैसे-जैसे अंधेरा गहराता गया, वह सितारों से भर गया। हमने गेस्ट हाउस की छत पर जाकर आकाश को निहारा और जो दृश्य वहाँ दिखा, वह शब्दों से परे था। आकाशगंगा की धुंधली पट्टी, असंख्य टिमटिमाते तारे और उसके नीचे बर्फीले पहाड़ों की नीरव छाया, ऐसा अनुभव जीवन में कितनी बार मिलता है? शहरों में जहाँ कृत्रिम रोशनी और धूल-धुएं ने आकाश को ढक लिया है, वहीं सिस्सू में आसमान ने हमारे सामने अपनी असली पहचान प्रकट की - विस्तृत, गहरा और रहस्यमयी।

सिस्सू की शांत रात के बाद, अगली सुबह ठंडी हवा और पहाड़ों की गोद से झांकती पहली धूप के साथ हमने अपनी यात्रा का अगला चरण शुरू किया। हमारा लक्ष्य था केलांग, जो लाहौल-स्पीति जिले का प्रशासनिक मुख्यालय है और संस्कृति तथा अध्यात्म की दृष्टि से भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थल। जैसे ही हमारी कार सर्पीली सड़कों से होती हुई केलांग की ओर बढ़ी, दूर-दूर तक फैली हुई हिमाच्छादित पर्वत श्रृंखलाएँ, नीचे बहती भागा नदी और घाटियों में फैले

छोटे-छोटे खेतों ने हमारे मन को सम्मोहित कर लिया। रास्ते में हवा और भी ठंडी हो गई थी, लेकिन सूरज की हल्की-सी गर्माहट इस ठंड को सुखद बना रही थी। केलांग में प्रवेश करते ही वातावरण में एक विशिष्ट तिब्बती प्रभाव महसूस हुआ। रंगीन घर, बुद्ध प्रतिमाओं से सजी गलियाँ, मंदिरों की घंटियाँ और मंद स्वर में गूंजते मंत्रों की ध्वनि। यह शहर कोई सामान्य नगर नहीं, बल्कि एक संवेदनशील आत्मा वाली सांस्कृतिक बस्ती जैसा प्रतीत होता है, जहाँ हर पत्थर, हर दीवार कोई कहानी कहते है।

हमने सबसे पहले स्थानीय बाजार की ओर रुख किया, जहाँ तिब्बती हस्तशिल्प, ऊन से बने शॉल, प्रार्थना चक्र, और लोककला की वस्तुएँ सज-धज कर रखी थीं। मेरी पत्नी ने कुछ ऊनी टोपियाँ और बेटा लकड़ी की बनी याक की छोटी मूर्ति लेकर बेहद खुश हुआ।

इसके बाद हम करदंग मठ एक विशिष्ट स्थल की ओर निकले। लगभग 11,000 फीट की ऊँचाई पर स्थित करदंग मठ लगभग 900 वर्ष पुराना है और यह लाहौल घाटी का सबसे बड़ा और सबसे प्रतिष्ठित बौद्ध मठ माना जाता है। मठ के प्रवेशद्वार पर ही रंग-बिरंगे प्रार्थना झंडे हवा में लहरा रहे थे। हर झंडी पर मंत्र अंकित थे, जिनकी लहराहट मानो आशीर्वाद बनकर चारों दिशाओं में फैल रही थी। बेटे ने उत्सुकता से मुझसे पूछा: "पापा, ये झंडे क्यों लहराते हैं? और ये जो पहिए घूमते हैं, उनसे क्या होता है?" मैं मुस्कराया। उसके प्रश्नों का उत्तर दिया।

लाहौल की वादियों में बिताए गए हर दिन के साथ हमारा मन और अधिक प्रकृति के करीब होता जा रहा था। अगली सुबह, जब सूरज ने पहाड़ों की चोटियों पर हल्का सुनहरा रंग बिखेरा, हम केलांग से रवाना हुए। आज का हमारा गंतव्य था 'जिस्पा', एक छोटा लेकिन बेहद रमणीय और आत्मीय गाँव, जो केलांग से लगभग 20 किलोमीटर दूर है। जिस्पा तक का रास्ता मानो किसी चित्रकला की जीवित पट्टी से गुजरने जैसा था। दोनों ओर ऊँचे-ऊँचे पर्वत, बीच में बहती 'भागा' नदी की चमकती धार और कहीं-कहीं जमी हुई बर्फ की सिलवटें, यह सब मिलकर एक स्वप्नलोक जैसा दृश्य प्रस्तुत कर रहे थे।

गाँव के पास ही भागा नदी के किनारे हमने पहले से एक टेंट कैंप बुक किया हुआ था। टेंट लकड़ी के फ्रेम और मोटे कनवास से बने थे, जिनकी बनावट पारंपरिक लाहौली शैली से प्रेरित थी, लेकिन अंदर सभी आवश्यक सुविधाओं से सुसज्जित थे। चारों ओर फैली हरियाली, नदी की कलकल और सामने खड़ी हिमालय की बर्फीली चोटियाँ जैसे हमारा स्वागत कर रही थीं।

शाम होते-होते तापमान तेजी से गिरने लगा। बर्फीली हवा के झोंकों ने हमें गरम जैकेटों में समा जाने को मजबूर कर दिया। लेकिन टेंट के बाहर एक छोटा सा कैंपफायर जलाया गया, जिसके चारों ओर बैठकर यात्री, स्थानीय गाइड और हम तीनों, सभी एक-दूसरे की कहानियों में डूब गए।

बेटा उस रात बहुत उत्साहित था। यह पहली बार था जब वह टेंट में सोने जा रहा था। उसकी आँखों में कौतूहल और हर्ष था। वह बार-बार ज़िप खोलकर बाहर झांकता "पापा, क्या सच में हम खुले आसमान के नीचे हैं?" उसकी मासूम बातों में एक नई खोज की शुरुआत हो रही थी।

जिस्पा की ठंडी, पारदर्शी रात के बाद सुबह कुछ विशेष लेकर आई। आज हमारी यात्रा का सबसे ऊँचा, सबसे कठिन और शायद सबसे सुंदर दिन था। आगे की ओर हमारा लक्ष्य था हिमालय की गोद में छुपे तीन अद्वितीय रत्न: दीपक ताल, सूरज ताल और बरलाचा ला।

कुछ ही समय में हम पहुँचे दीपक ताल, एक नन्ही सी, लेकिन मंत्रमुग्ध कर देने वाली झील, जो अपने चारों ओर खड़ी बर्फीली चोटियों की गोद में चमक रही थी। यह झील इतनी शांत, इतनी नीरव थी कि उसका जल स्थिर दर्पण की तरह बादलों, पहाड़ों और हमारी आत्मा की परछाईं तक को समेट रहा था। वहाँ कुछ पल खड़े रहना जैसे जीवन की गति को रोक देना था - एक विराम, जो भीतर तक उतर गया।

हमने कुछ समय वहाँ बिताया। बेटा झील के किनारे पत्थर उछालता रहा। वह क्षण शब्दों में नहीं, केवल अनुभव में समाया जा सकता था।

आगे बढ़ते हुए, सड़क और पतली, ऊँचाई और कठिन होती चली गई। अब हम लगभग 16,000 फीट की ऊँचाई पर पहुँचने वाले थे। गंतव्य था: सूरज ताल यह झील भारत की तीसरी सबसे ऊँचाई पर स्थित झील है और इसे भागा नदी का उद्गम स्थल माना जाता है। जैसे ही सूरज ताल सामने आया, हम कुछ क्षण स्तब्ध रह गए। वह नीला, आसमानी और रहस्य से भरपूर जलराशि जैसे किसी और ही दुनिया से उतरी हो। वहाँ की हवा में ऑक्सीजन की कमी महसूस होने लगी थी, लेकिन उस सौंदर्य को देखकर हमारी थकान, सिरदर्द और शरीर का भारीपन सब जैसे कहीं उड़ गए।

हमने वहाँ कुछ पल बिताएं। अंत में, हमने पार किया बरलाचा ला। इस स्थान पर पहुँचने के बाद हमारी साँसें थोड़ी तेज़ चलने लगीं, लेकिन आँखों के सामने फैला दृश्य जैसे किसी ईश्वरीय चित्रकार की कृति हो। बरलाचा ला की हवा तेज़, बर्फ चमकदार और मौन बहुत गहरा था। वहाँ खड़े होकर लगा मानो हम किसी देवभूमि के प्रवेश द्वार पर हों, जहाँ पहुँचकर मनुष्य अपने सबसे छोटे रूप में स्वयं को देखता है और प्रकृति अपने सबसे विराट रूप में सामने होती है।

बरलाचा ला पर बिताए उन अद्भुत क्षणों को दिल में संजोकर हमने वापसी का रुख किया। अब रास्ता वही था, लेकिन अनुभव पूरी तरह नया। हम फिर से उसी मार्ग से होकर लौटे जिस्पा, केलांग, सिस्सू और अंततः मनाली। हर मोड़, हर चोटी, हर नदी अब पहचान में आने लगी थी, लेकिन इस पहचान के साथ एक अलौकिक आत्मिक जुड़ाव भी था। अब इन स्थानों से हमारा नाता केवल एक पर्यटक का नहीं, बल्कि एक आत्मीय सखा का बन चुका था।

मनाली में हम एक रात और रुके, लेकिन इस बार होटल का कमरा सिर्फ विश्राम का स्थान नहीं था, बल्कि पूरी यात्रा की पुनरावृत्ति का मंच था। हमने उस रात देर तक बातें कीं, बेटे ने अपने स्केचबुक में सूरज ताल की झील बनाई।

यह यात्रा केवल बर्फ, पहाड़ और घाटियों की नहीं थी। यह एक जीवंत संवाद थी प्रकृति और हमारी आत्मा के बीच। हमने सीखा कि असली यात्रा वे नहीं होतीं, जहाँ आप बस घूमते हैं, तस्वीरें लेते हैं और लौट आते हैं। असली यात्रा वह होती है, जहाँ आप भीतर तक बदल जाते हैं।

हमने पहाड़ों से धैर्य सीखा, नदियों से निरंतर बहते रहना, झीलों से शांति और बर्फ से शुद्धता। बेटे के लिए यह यात्रा एक जीवंत पाठशाला थी, जहाँ उसने न केवल प्रकृति को जाना, बल्कि ध्यान, मौन और जिज्ञासा को भी सीखा।

हमें यह अनुभव भी हुआ कि भारत के नक्शे पर आज भी ऐसी जगहें हैं जहाँ न मोबाइल नेटवर्क होता है, न शहरों का शोर, सिर्फ शांति, सरलता और सच्चा आनंद। इन स्थानों पर आप केवल पर्यटक नहीं रहते, आप प्रकृति के साक्षी बन जाते हैं और जब आप लौटते हैं, तो साथ में केवल तस्वीरें नहीं लाते, बल्कि एक बदला हुआ, अधिक सजग और गहराई से जुड़ा हुआ मनुष्य बनकर लौटते हैं।

अक्षयदीप त्रिपाठी
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय, कानपुर

मजदूर

सुबह-सुबह मज़दूर निकल पड़ते हैं,
कंधे पर झोला, हाथों में उम्मीद टांग कर।
ना जाने किस गली से आज रोज़ी मिले,
पर हर क़दम में होती है पूरी ज़िंदगी दाँव पर।

कोई दिहाड़ी, तो कोई महीने का मज़दूर है साहब,
पर हर एक का सपना एक ही -
रोटी के साथ थोड़ी सी इज़्ज़त भी हो।
ना कुर्सी चाहिए, ना ताज, ना तख़्त,
बस एक छत हो, और बच्चों की हँसी हो, रात की ख़ामोशी में।

कोई कपड़े में बाँधता है रोटी प्याज़ के साथ,
तो किसी के पास स्टील का टिफ़िन है,
कोई चलता है नंगे पाँव, कोई चमचमाते जूते में।
किसी के कंधे पर गमछा है,
तो कोई टाई बाँधकर हीरो लगता है।

कोई मज़दूर पैदल चलता है, कोई साइकिल पर,
कोई नाव में मँझी पार करता है हर रोज़ -
हर कोई चल पड़ा है सुबह-सुबह,
अपने-अपने सपनों की मज़दूरी के लिए।

मज़दूर हैं ये सब - अलग-अलग रूपों में,
कोई खाकी में, कोई सूट-बूट में,
कोई मिट्टी से सना है, तो कोई फ़ाइलों में दबा है।
फिर भी सब एक जैसे -
पसीने के पीछे भूख है, माथे पर चिंता और दिल में कुछ सपने।

कुछ मज़दूर - 'मज़दूर' ही कहे जाते हैं,
और कुछ को लोग 'साहब, साहब' बुलाते हैं।
पर क्या सच में साहब मज़दूर से अलग है?
या सिर्फ़ उसका कुर्ता साफ़ है और कुर्सी ऊँची?

पता नहीं ये साहब किस ग़लतफ़हमी में रहते हैं,
मज़दूर को छोटा समझते हैं,
पर मज़दूर को जब समझते हैं,
तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।
क्योंकि साहब, जो ईंट उठाता है वो भी देश बनाता है,
और जो कंप्यूटर चलाता है - वो भी तो मेहनत ही करता है।

वो नारा नहीं लगाता, पर हर साँस में इंक़लाब है,
जब मिट्टी को सोना बनाता है, तभी तो देश आबाद है।
ना नाम अख़बारों में, ना तस्वीर किसी पत्रिका में,
फिर भी हर इमारत में उसके हाथों की लकीर है।

तो झुक के मत देख उसे,
वो उठा नहीं, तो तेरा महल भी सरक जाएगा।
मज़दूर है वो — मजबूर नहीं,
जब समय आता है, तो मिट्टी से भी इतिहास लिख जाता है।

विशाल अग्रवाल
मुख्य प्रबंधक
एसएमई व कृषि हब
अंचल कार्यालय, कानपुर

जिंदगी की बैंकिंग

सुबह सुबह उठते ही एक विचार मन में आ जाता है
कि रोज की तरह फिर एक बार हमें भागमभाग में लग जाना है,
सुबह की चाय भी ठंडी हो जाती है
घड़ी की सुईयां भी बिना ठहरे दौड़ती जाती हैं।

सैकड़ों फॉर्म, सैकड़ों दस्तखत
कागजों में जीवन बंधा सा लगता है,
न कोई दस्तक, न कोई मुस्कान शेष
हर एक चेहरा मशीन से बना लगता है।

बचपन की गलियाँ, अब सपना सा लगती हैं
कंचों की वो लड़ाई, अब यादों में बसती हैं,
फेसबुक इन्स्टा हो या फिर रोजाना स्टेटस बदलने का भार
कंधों पे लदे हैं अब अपनी इच्छाओं के कारोबार।

हर दिन दौड़ते हैं, किसी "कल" के पीछे
पर "आज" को जीना, जैसे रह गया है पीछे,
कभी सोचता हूँ - क्या यही था सपना मेरा?
या बचपन की वो मिट्टी थी असली सोना मेरा?

पर फिर भी मुस्कुराता हूँ, यही तो है जीवन की चाल,
बैंक हो या बचपन - किसे सुनाऊँ अपना हाल।

शिवानी बालानी
प्रबंधक
अंचल कार्यालय, धर्मशाला

मेरा हिमाचल, मेरी पहचान

नीले अम्बर की गोद में बसा है स्वर्ग सा स्थान
हरियाली की चादर ओढ़े, गाता है पर्वत गान,
जहाँ हर सुबह की हवा हो शुद्ध और सुगंधित जान
प्रकृति की मुस्कान है - मेरा हिमाचल, मेरी पहचान।

झीलों की नीली सतह में झलकती हैं बातों की शान
चन्द्रताल, खज्जियार, कहते हैं दिल का सम्मान,
हर घाटी का संगीत सुनता है सारा जहाँ
शांति का प्रतीक है - मेरा हिमाचल, मेरी पहचान।

कुल्लू की घाटी में खिलते हैं उत्सव के फूल
किन्नौर की गलियों में बिखरे रंगों के उसूल,
चंबा की कहानियाँ, मंडी का अद्भुत गान
हर परंपरा में बसी है - मेरा हिमाचल, मेरी पहचान।

जहाँ वीरों ने जन्म लिया, देश की रक्षा में प्राण गँवाए
पराक्रम की धरती है ये, इतिहास स्वयं बतलाए,
हर सीने में देशभक्ति का जलता है दीप महान
बलिदान की भूमि है - मेरा हिमाचल, मेरी पहचान।

धर्मशाला की वादियाँ गुनगुनाएँ शांति का गीत
लाहौल-स्पीति की चोटियाँ सुनाएँ साहस की प्रीत,
मनाली की गलियों में बसी है मुस्कान की जान
हर मुसाफिर को दे अपनापन - मेरा हिमाचल, मेरी पहचान।

अनरसा :एक पारंपरिक स्वाद

भाव्या
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय ,सिलीगुड़ी

दीवाली हो या होली बिहार, झारखंड में मीठे पकवानों में अनरसे के बिना त्यौहार अधूरा सा लगता है। मेरी बड़ी चाची के हाथ के बने अनरसों का स्वाद याद आते ही जिह्वा पुनः उसे चखने के लिए लालायित हो उठती है। अनरसा के इतिहास की बात करें तो बिहार के गया जिले से इसकी शुरुआत हुई थी और आज उस छोटे सी जगह से निकलकर यह अपनी वैश्विक पहचान बना चुका है।

ऊपर से कुरकुरे और अंदर से एक मुलायम स्वाद लिए अनरसे को जो कोई खा लेता है वो इसका स्वाद दोबारा लिए बिना नहीं रह पाता है। आजकल बाजारों में भी अनरसे आसानी से मिल जाते हैं, हालांकि आप अगर घर पर ही स्वाद से भरपूर अनरसे बनाना चाहते हैं तो इस प्रकार बना सकते हैं।

अनरसा को दो तरह से बना सकते है या तो गोल-गोल गोलियों जैसे या फिर चपटी टिकिया के जैसे। आइए जानते हैं स्वादिष्ट अनरसे बनाने की बेहद आसान विधि-

अनरसा बनाने के लिए सामग्री

चावल – 2 छोटी कटोरी

दही – 1 चम्मच

तिल – 2-3 चम्मच

चीनी पाउडर – 3/4 कप

देसी घी – तलने के लिए

स्वाद से भरपूर अनरसा बनाने के लिए सबसे पहले चावल को दो से तीन दिन (कम से कम 48 घंटे) पहले ही पानी में भिगोकर रख दें। अनरसे के लिए छोटे नए चावल का इस्तेमाल बढ़िया होता है। चावल को भिगोने के दौरान हर 24 घंटे में इसका पानी बदल दें। निर्धारित समय के बाद चावल का पानी निकाल दें और भीगे चावलों को मोटे कपड़े पर फैलाकर छाया वाली जगह पर सुखाने के लिए रख दें।

जब चावल का ज्यादातर पानी सूख जाए परंतु उनमें नमी बरकरार रहे तो चावल को मिक्सी की मदद से दरदरा आटे जैसा पीसकर एक बर्तन में निकाल लें। इसके बाद इस आटे को छलनी से छान लें और एक बड़े कटोरे में डाल दें। अब आटे में चीनी पाउडर और थोड़े से घी को डालकर अच्छी तरह से मिला दे। अब दही को मथें और उसकी मदद से आटे को सख्त गूंथ लें। इसके बाद आटे को 10-12 घंटे के लिए ढककर अलग रख दें।

तय समय के बाद आटा लेकर उसे एक बार और गूंथें। इसके बाद आटे की छोटी-छोटी लोइयां बनाएं और उन्हें तिल में लपेट लें। जब लोई के चारों ओर तिल अच्छे से चिपक जाए तो उसके दोनों हथेलियों के बीच रखकर दबाएं और चपटा कर लें। इसी तरह सारी लोइयों से अनरसे बना लें। इसके बाद एक कड़ाही में देसी घी डालकर उसे मध्यम आंच पर गर्म करें। जब घी गर्म होकर पिघल जाए तो उसमें अनरसे डालें और पलट पलटकर अनरसे को भूरा होने तक अच्छे से तलें। इसके बाद अनरसे को एक बर्तन में निकालकर अलग रख दें। इसी तरह सारे अनरसों को तल लें। अब अनरसों को ठंडा होने के लिए रख दें। स्वाद से भरपूर अनरसे बनकर तैयार हो चुके हैं। इसे आप कुछ दिनों तक उपयोग में ला सकते है।

हालांकि पारंपरिक तौर से बने अनरसों के अलावा विधि में थोड़े बदलाव कर इसे और भी कई रूप दिए जा सकते हैं। गोलियों के बीच खोवे को भरकर इनके स्वाद को और भी बढ़ाया जा सकता है।

संसदीय राजभाषा समिति का निरीक्षण एवं प्रदर्शनी

गुवाहाटी निरीक्षण

गुवाहाटी प्रदर्शनी

बैंगलोर निरीक्षण

बैंगलोर प्रदर्शनी

माननीय सांसद श्री नीरज डांगी जी आंगतुक पंजी में टिप्पणी अंकित करते हुए

देहरादून निरीक्षण

देहरादून प्रदर्शनी

प्रधान कार्यालय

ईज पुरस्कार - द्वितीय उप विजेता

वित्तीय सेवाएं विभाग - द्वितीय पुरस्कार

राजभाषा कार्यशाला

राभाकास बैठक

यूको अनुगूँज (मार्च 2025) का विमोचन

नराकास (बैंक) कोलकाता (पुरस्कार अर्पण समारोह)

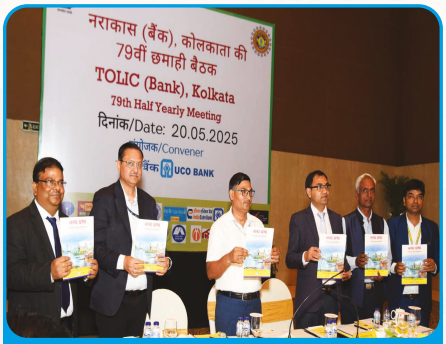

नराकास (बैंक) कोलकाता की पत्रिका नगर प्रभा का विमोचन

अंचल कार्यालय एवं शाखाएं

आलेख एवं साक्ष्य उपसमिति द्वारा अलीगढ़ शाखा का निरीक्षण

राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह - प्रतीक चिह्न निर्माण प्रतियोगिता - प्रथम पुरस्कार श्री तरुण कुमार सिंह, कानपुर अंचल

मेरठ अंचल - नराकास का तृतीय पुरस्कार

अहमदाबाद अंचल - नराकास का तृतीय पुरस्कार

सिलीगुड़ी अंचल - नराकास का द्वितीय पुरस्कार

आगरा शाखा - नराकास का तृतीय पुरस्कार

तिरुवनंतपुरम शाखा - नराकास का तृतीय पुरस्कार

हाईकोर्ट रोड शाखा - नराकास का द्वितीय पुरस्कार

पाठकीय प्रतिक्रिया

श्री अभिषेक सिंह, अंचल प्रमुख, करनाल

"यूको अनुगूँज" का यह विशेषांक पढ़कर मन गर्व और आत्मीयता से भर उठा। महिला सशक्तिकरण जैसे महत्वपूर्ण विषय को केंद्र में रखकर जिस संवेदनशीलता और गंभीरता से विविध रचनाओं को स्थान दिया गया है, वह प्रशंसनीय है। प्रत्येक लेख, कविता और विचार पाठकों को न केवल सोचने पर विवश करता है, बल्कि भीतर कहीं गहराई से छूता भी है।

इस अंक ने यह स्पष्ट कर दिया कि यूको बैंक केवल आर्थिक गतिविधियों तक सीमित नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना और रचनात्मक अभिव्यक्ति का भी एक जीवंत मंच है। महिला उत्थान की दिशा में यह साहित्यिक प्रयास निश्चय ही प्रेरणास्पद और सराहनीय है।

श्री राजेश कुमार सिंह, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा), इण्डियन बैंक, चेन्नै

महिला सशक्तिकरण पर आधारित पत्रिका का आवरण पृष्ठ विषयानुरूप है तथा इस विशेषांक को पूर्णतः परिभाषित करता है। पत्रिका की साज-सज्जा एवं कलेवर अत्यंत सुंदर एवं मनोहारी हैं।

पत्रिका में संकलित समस्त रचनाएँ विषयानुकूल, ज्ञानवर्धक, पठनीय एवं संग्रहणीय हैं। विशेष रूप से 'सशक्त महिला, सशक्त समाज', 'महिला सशक्तिकरण: सामाजिक सरकारी प्रयास', 'हिंदी के प्रचार-प्रसार में सोशल मीडिया की भूमिका', 'शंखनाद हो...', 'इक औरत' तथा 'दफ्तर की जिंदगी' जैसी रचनाएँ अत्यंत प्रासंगिक एवं मर्मस्पर्शी हैं। साथ ही, पत्रिका में सम्मिलित विभिन्न कार्यालयीन गतिविधियों के चित्र एवं पुस्तक समीक्षाएँ इसकी शोभा बढ़ा रहे हैं।

श्री गौरव कपिल, मुख्य प्रबंधक, पानीपत शाखा

"यूको अनुगूँज" का यह विशेषांक 'महिला सशक्तिकरण' विषय को समर्पित एक उत्कृष्ट प्रयास है। इसमें प्रस्तुत लेख, कविताएँ, साक्षात्कार और समीक्षाएँ न केवल विचारोत्तेजक हैं, बल्कि समाज में महिलाओं की भूमिका को नए दृष्टिकोण से देखने की प्रेरणा भी देते हैं। पत्रिका की भाषा सरल, प्रभावशाली और भावनाओं से ओतप्रोत है। संपादकीय टीम का यह प्रयास न केवल साहित्यिक बल्कि सामाजिक चेतना का भी वाहक है।

श्री दुर्गेश तिवारी, प्रबंधक, अंचल कार्यालय, लखनऊ

यूको अनुगूँज" का नवीनतम अंक हमारे समाज की 'महिलाओं' द्वारा जीवन के सभी क्षेत्रों में दिए गए योगदान को उजागर करता है। किस प्रकार महिलाएं सशक्त होकर समाज में योगदान दे रही हैं, इस पर विस्तृत विमर्श 'यूको अनुगूँज' के जनवरी-मार्च 2025 अंक में किया गया है। 'एक मुलाकात' स्तंभ के अंतर्गत निवेदिता दुबे जी का साक्षात्कार अत्यंत प्रेरणादायक है। अयोध्या भ्रमण पर आधारित संस्मरण पढ़कर श्रीराम के दर्शन की इच्छा और भी प्रबल हो गई है। पत्रिका के सभी लेख संग्रहणीय हैं।

श्रीमती अनीता कुमारी, वरिष्ठ प्रबंधक, एसएमई हब, लखनऊ

महिला सशक्तिकरण विषय पर आधारित इस पत्रिका मे महिलाओं से जुड़े सभी मुद्दों को उठाया गया है| ये सभी मुद्दे महिलाओं के जीवन से जुड़े हुए हैं और महिलाओं के जीवन के सभी पक्षो को उभारतें हैं| 'श्रेष्ठ प्रबंधन बनाम महिलाएं' विषयक लेख विशेष रूप से सराहनीय है, जो महिलाओं की क्षमताओं को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है। पत्रिका के सभी लेख अपने आप में अनूठे हैं। निःसंदेह यह अंक सहेज कर रखने योग्य है।

श्री आदर्श कुमार, सहायक प्रबंधक, बहादुरगढ़ शाखा

यूको अनुगूँज' का यह अंक महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक सार्थक साहित्यिक पहल प्रतीत होता है। पत्रिका में विविध विषयों पर आधारित लेखों की प्रस्तुति, विचारों की गंभीरता और भाषा की सहजता पाठकों को अंतर्मन तक प्रभावित करती है। इसमें समाहित रचनाएँ केवल सूचनात्मक ही नहीं, बल्कि प्रेरणादायक भी हैं, जो महिला उन्नयन की वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत करती हैं। यूको परिवार का यह प्रयास निश्चित रूप से प्रशंसा के योग्य है और आशा है कि भविष्य में भी ऐसे ही प्रासंगिक विषयों पर समर्पित अंकों का प्रकाशन होता रहेगा।

श्री राहुल साव, प्रबंधक- राजभाषा, इंडियन बैंक, अंचल कार्यालय, सिलीगुड़ी

"यूको अनुगूँज" की नवीनतम विशेषांक, जो महिला सशक्तिकरण जैसे अत्यंत महत्वपूर्ण विषय पर केंद्रित है, पढ़कर अत्यंत हर्ष और गर्व की अनुभूति हुई। पत्रिका में प्रस्तुत लेख, संस्मरण, साक्षात्कार और प्रेरणादायक कहानियाँ न केवल महिलाओं की उपलब्धियों को उजागर करती हैं, बल्कि समाज में व्याप्त रूढ़ियों को तोड़ने का संदेश भी देती हैं।

इस विशेषांक में शामिल महिला कर्मचारियों के अनुभव और संघर्षों को जिस संवेदनशीलता और गहराई से प्रस्तुत किया गया है, वह सराहनीय है। यह पत्रिका न केवल एक प्रेरणास्रोत है, बल्कि यह हम सभी को आत्ममंथन के लिए भी प्रेरित करती है कि हम अपने कार्यक्षेत्र और समाज में लैंगिक समानता को कैसे और बेहतर बना सकते हैं।

"यूको अनुगूँज" का यह प्रयास न केवल सराहना के योग्य है, बल्कि इसे प्रत्येक जन तक पहुँचाया जाना चाहिए, ताकि महिला सशक्तिकरण के इस संदेश को और व्यापक स्तर पर फैलाया जा सके।

ओड टू ए नाइटिंगेल

हृदय की वीणा बोझिल स्वर में डूबी,
मन की मौनता जैसे विष में रूबी।
तेरे गीतों की छाया है चंद्रप्रभा,
जीवन को दे स्वर्गिक अलौकिक हवा।
नश्वरता के अरण्य में तू अमर वंशी,
तेरे स्वर में बसी है कालातीत रश्मि।

हे वन-वधू! पंखों की कोमल छाया,
तेरे सुरों में गूँजती अमरता की माया।
न तू जन्मी, न तू मरी,
तेरे राग में कालजयी ध्वनि भरी।
ऋतु की रागिनी बन तू बहती,
आत्मा की सरिता में मधुरता कहती।

जीवन की धुंध में दीपक-सा तेरा गान,
मृत्यु भी सुनकर हो जाए मौन महान।
कल्पना के पंखों पर उड़ता मन,
तेरे सुरों से छूता दिव्य गगन।
तेरा गीत है अमरता की पुकार,
जो मिटा दे हर पीड़ा का भार।

स्वप्न टूटे, जागा अंतर्मन,
तेरा गीत गूँजे हर वन-उपवन।
क्या यह यथार्थ था या माया का छल?
तेरी रागिनी बनी आत्मा का संबल।
तेरे सुरों में जो शांति मिली,
वह जीवन की सबसे मधुर उषा बनी।

एक आलंकारिक यात्रा के रूप में प्रस्तुत कविता में नाइटिंगेल का गीत एक अमर सौंदर्य और शांति का प्रतीक बन जाता है, जो कीट्स को जीवन की क्षणिक पीड़ा, मृत्यु की अनिवार्यता और मानव अस्तित्व की सीमाओं से ऊपर उठने का मार्ग दिखाता है। यह गीत एक कल्पना की वंशी है, जो उसे एक ऐसे लोक में ले जाती है जहाँ न दुःख है, न रोग, न मृत्यु — केवल कला की अमरता और प्रकृति की शाश्वतता है। कीट्स इस गीत में मृत्यु की मधुरता, जीवन की नश्वरता, और कविता की मुक्ति को आलंकारिक रूप में अनुभव करता है, मानो वह एक स्वप्नलोक में विचरण कर रहा हो, जहाँ आत्मा को शांति और सौंदर्य की शाश्वत छाया मिलती है।

जॉन कीट्स

परिचय

साहित्य को सौंदर्य और भावनाओं की नवीन परिभाषा देने वाले रोमांटिक युग के दिव्य कवि जॉन कीट्स जन्म 31 अक्टूबर, 1795 को लंदन के मुरगेट में हुआ था। इनके पिता थॉमस किट्स अस्तबल में कार्य करते थे तथा इनकी माता फ्रांसिस जेनिंग्स थीं। जॉन चार बच्चों में सबसे बड़े पुत्र थे।

बाल्यकाल में ही माता-पिता के निधन ने कीट्स को जीवन की नश्वरता से परिचित कराया। इनकी आरंभिक शिक्षा स्थानीय डेम विद्यालय से हुई। वर्ष 1803 में उन्होंने उन्हें जॉन क्लार्क स्कूल, एनफील्ड से आगे की पढ़ाई पूर्ण की। स्कूल के प्रधानाचार्य के पुत्र चार्ल्स काउडन क्लार्क उनके मार्गदर्शक और मित्र बने, जिन्होंने उन्हें स्पेंसर, टॉरक्वाटो टासो तथा होमर जैसे साहित्यकारों से परिचित कराया।

कीट्स का प्रेम जीवन भी उनकी कविताओं की तरह भावनाओं से परिपूर्ण था। फैनी ब्राउन से उनका प्रेम, जो आर्थिक तंगी के कारण विवाह तक नहीं पहुँच सका, उनकी रचनाओं में गहराई से झलकता है।

कीट्स ने वर्ष 1814 में अपनी पहली कविता "अन इमिटेशन ऑफ़ स्पेंसर" लिखी। वर्ष 1816 में उनकी कविता "ओ सॉलिट्यूड" पहली बार प्रकाशित हुई। उनकी शैली में कल्पना, भावनात्मक गहराई और प्रकृति की सुंदरता का अद्भुत समावेश था। उन्होंने सौंदर्य को सत्य और कल्पना को आत्मा की अभिव्यक्ति मानकर रचनाएं की, जिसे प्रारंभ में आलोचनाओं का सामना करना पड़ा।

वर्ष 1819 को उनका अद्भुत वर्ष (ऐनस मिराबिलिस) माना जाता है, जिसमें उन्होंने ओड टू ए नाइटिंगेल, टू ऑटम्न तथा ओड ऑन अ ग्रीशियन अर्न जैसी कालजयी रचनाएँ दीं। उन्होंने नेगेटिव केपेबिलिटी जैसे सिद्धांत प्रस्तुत किए, जिसमें कवि को रहस्यों और अनिश्चितताओं को सहजता से स्वीकार करने की क्षमता रखने वाला बताया गया।

जीवनकाल में उन्हें कोई औपचारिक पुरस्कार नहीं मिला, बल्कि आलोचना और उपेक्षा का सामना करना पड़ा। लेकिन मृत्यु के बाद उन्हें अंग्रेजी साहित्य के महानतम कवियों में स्थान मिला। रोम में जहाँ उनकी मृत्यु हुई, वहाँ एक संग्रहालय उनकी स्मृति को समर्पित है। उनकी कविताओं ने प्री-राफेलाइट ब्रदरहुड, विक्टोरियन कवियों और आधुनिक साहित्यकारों जैसे टी.एस. एलियट और विल्फ्रेड ओवेन को गहराई से प्रभावित किया।

जॉन कीट्स ने विश्व साहित्य को सौंदर्य, कल्पना और आत्मचिंतन की वह दृष्टि दी, जो आज भी कला, कविता और दर्शन को प्रेरित करती है। उनकी रचनाएँ अनेक भाषाओं में अनूदित होकर वैश्विक पाठकों तक पहुँचीं और उनकी विरासत आज भी जीवंत है। उनका निधन 23 फरवरी, 1821 को हुआ।

विचारों से सृजन तक : वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान हमारे प्रकाशन